।। ओ३म् ।।

वैदिक हवन पद्धति

प्रकाशक :

वैदिक विचार मंच

वेद मन्दिर, सिद्धि प्लाजा, बर्द्धवान रोड, सिलीगुड़ी

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशकः

वैदिक विचार मंच

वेद मन्दिर, सिद्धि प्लाजा, बर्द्धवान रोड,
सिलीगुड़ी
संपर्क सूत्र : 9800012213, 9832366857

संकलक : पं0 वसुमित्र

सहयोग राशि : 80.00 रूपये

दो शब्द

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्रत्येक गृहस्थी को अपने सुखी जीवन के लिए पंच महायज्ञों को प्रतिदिन करने की व्यवस्था दी है । पहला ब्रह्मयज्ञ, दूसरा देवयज्ञ, तीसरा पितृयज्ञ, चौथा अतिथियज्ञ और पॉचवा बलिवैश्य यज्ञ है । इस पुस्तक में प्रथम दोनों महायज्ञो को करने की पूर्ण विधि दी गई है और साथ ही साथ सुन्दर भजनों का संग्रह भी किया गया है ।

पहला महायज्ञ–ब्रह्मयज्ञ अर्थात् एकान्त में बैठकर परमात्मा को स्मरण करना, उससे प्रार्थना करना और उसका धन्यवाद करना । उक्त पुस्तक में संध्या–उपासना के मंत्रों और विधि का उल्लेख किया गया है । दूसरा महायज्ञ–देवयज्ञ(हवन) अर्थात् अग्निहोत्र के अर्थ सहित मंत्र और विधि का उल्लेख किया गया है । परमात्मा में मन लगाने में भजनों का विशेष महत्व होता है । इसलिए प्यारे प्यारे भजनों का संग्रह भी किया गया है । इस प्रकार इस पुस्तक को तीन खण्डों में विभाजित किया गया है पहला ब्रह्मयज्ञ(सन्ध्या विधि), दूसरा देवयज्ञ(हवन) और तीसरा भजन लहरी (भजन संग्रह) ।

वैदिक विचार मंच, सिलीगुड़ी वैदिक विचारधारा के प्रचार–प्रसार में निरंतर कार्यरत है । जिससे मनुष्य वैदिक मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने जीवन कें कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकें । इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए मंच ने इस पुस्तक को प्रकाशित किया है ।

प्रभु से प्रार्थना है कि यह पुस्तक सभी के लिए लाभकारी सिद्ध हो ।

धन्यवाद!

सत्येन्द्र आर्य

प्रभु से...प्रार्थना

हे सर्वाधार, सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर ! तुम अनन्तकाल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो । प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को तुम ही प्रतिक्षण पूर्ण करते हो । हमारे लिए जो कुछ शुभ है तथा हितकर है उसे आप बिना माँगे स्वयं हमारी झोली मेंडालते जाते हो, आपके ऑचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है । आपकी चरण–शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है ।

हे जगत्पिता परमेश्वर ! हममें सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो । हम तुम्हारी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बनें । अन्तःकरण को मलिन बनाने वाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें । काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें । अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो ! हम तुम्हें पुकारते हैं और तुम्हारा ऑचल पकड़ते हैं ।

हे परम पावन प्रभो ! हममें सात्विक वृत्तियॉ जाग्रत हों । क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहंकार–शून्यता इत्यादि शुभ भावनाएं हमारी सम्पत्ति हों । हमारा शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हों, मन सूक्ष्म तथा उन्नत हों, आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो । तुम्हारे संस्पर्श से हमारी सारी शक्तियॉ विकसित हों । हृदय दया तथा सहानुभूति से भरा हो । हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो । विद्या और ज्ञान से हम परिपूर्ण हों । हमारा व्यक्तित्व महान तथा विशाल हो ।

हे प्रभो ! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो । दीनातिदीनों के मध्य में विचरण करनेवाले तुम्हारे चरणारबिन्दों में हमारा जीवन अर्पित हो, इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करो ।

ओं शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

.....महर्षि दयानन्द सरस्वती

।।ओ३म्।।

उमादेवीआर्या

जन्म–29सितंबर1958 स्वर्गवास–10नवंबर2021

स्व0उमादेवीआर्याजीकाजीवनआर्यजनोंकेलिएसदैवस्मरणीय रहेगा।सरलस्वभाव,दानशीलताऔरमृदुवाणीउनकेचरित्रकेविशेष गुण थे । पौराणिक परिवार से आकर आर्य परिवार की गृहवधू के रूप में उन्होंने अपनी जीवन शैली से पूरे परिवार के साथ–साथ सम्पर्क में आनेवाले समाज के सभी व्यक्तियों को प्रभावित किया । उन्होंने अपने पति (सुभाष चन्द्र आर्य जी) के द्वारा आर्य जगत् के लिए किये गये सभी कार्यों में पूरी निष्ठा और तत्परता से निरंतर सहयोग किया।उन्होंनेअपनेजीवनमेंनित्यसंध्याऔरहवनकोअंगिकृतकर अपनीसन्तानोंकोभीसंस्कारितकिया।

प्रभु की भक्ति में उनकी लगन थी। मीठे गले की स्वामीनी उमा देवी जी के द्वारा पारिवारिक तथा सामाजिक विशेष कार्यक्रमों में भजन प्रस्तुत करना सभी उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर देता था । भजन गायन के साथ ही साथ उन्होंने स्वयं भी कई प्यारे एवं प्रेरणादायक भजनलिखेहैं।

आर्यनिवास,
नेहरूरोड,खालपाड़ा
सिलीगुड़ी,दार्जिलिंग

ब्रह्म यज्ञः

(सन्ध्या विधि)

होकर अतिशय श्रद्धा विभोर, जो ईश्वर के गुण गाता है,
ईश्वर चिन्तन ही सुबह शाम, यह ब्रह्म यज्ञ कहलाता है ।
जो प्राणी विधाता ओ३म् का, सतत् ध्यान नित धरते हैं,
वे सद् विचार निज हृदय धार, साक्षात् प्रभु का करते हैं ।।

।। सन्ध्या विधि ।।

अथ ब्रह्म यज्ञः

गायत्री मंत्र का उच्चारण करके शिखा बॉधे ।
ओ३म्। भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

आचमन मन्त्र :
निम्न मन्त्र पढ़कर हथेली में थोड़ा जल लेकर तीन आचमन करें ।

ओ३म्। शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शंयोरभिस्रवन्तु नः ।।

इन्द्रियस्पर्श मन्त्राः

बायीं हथेली में जल लेकर निम्न मन्त्रों से दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों से पहले दाहिने और पश्चात् बायें पार्श्व में इन्द्रिय स्पर्श करें ।

ओ३म् वाक् वाक् ।। इससे मुख के दाहिने बायें
ओ३म् प्राणः प्राणः ।। इससे नासिका के दाहिने बायें
ओ३म् चक्षुः चक्षुः ।। इससे नेत्रों के दाहिने बायें
ओ३म् श्रोत्रं श्रोत्रम् ।। इससे कानों के दाहिने बायें
ओ३म् नाभिः ।। इससे नाभि का
ओ३म् हृदयम् ।। इससे हृदय का
ओ३म् कण्ठ : ।। इससे कण्ठ का
ओ३म् शिरः ।। इससे शिर का
ओ३म् बाहुभ्याम् यशोबलम् ।। इससे दाहिनी और बॉयी भूजा का
ओ३म् करतल करपृष्ठे ।। इससे हाथ की हथेली और पीठ

मार्जन मन्त्राः

बायीं हथेली में जल लेकर निम्न मन्त्रों से दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों से मार्जन करे अर्थात् इन्द्रियों पर जल छिड़के ।

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि ।। इससे शिर पर
ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोः ।। इससे नेत्रों पर
ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे ।। इससे कण्ठ पर
ओ३म् महः पुनातु हृदये ।। इससे हुदय पर
ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम् ।। इससे नाभि पर
ओ३म् तपः पुनातु पादयोः ।। इससे पैरों पर
ओ३म् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि ।। इससे शिर पर
ओ३म् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ।। इससे सब अंगों पर

प्राणायाम मन्त्राः

ओ३म् भूः । ओ३म् भुवः । ओ३म् स्वः ।
ओ३म् महः । ओ३म् जनः । ओ३म् तपः ।
ओ३म् सत्यम् ।

अघमर्षण मन्त्राः

ओ३म् ऋतं च सत्यंचाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ।।

ओ३म् समुद्रा दर्णवादधि संवत्सरो अजायत ।
अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।।

ओ३म् सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवींचान्तरिक्षमथो स्वः ।।

आचमन :

निम्न मन्त्र पढ़ हथेली में थोड़ा जल लेकर तीन आचमन करें ।

ओ३म्। शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शंयोरभिस्रवन्तु नः ।।

मनसा परिक्रमा मन्त्राः

ओ३म् । प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः । तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो अस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।

ओ३म् । दक्षिणादिगिन्द्रो अधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः । तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो अस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।

ओ३म् । प्रतीचीदिग्वरूणो अधिपतिः पृदाकू रक्षितान्न मिषवः । तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो अस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।

ओ३म् । उदीची दिक् सोमो अधिपतिः स्वजोरक्षिता शनिरिषवः । तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो अस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।

ओ३म् । ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरूध इषवः । तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो अस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।

ओ३म् । उर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः । तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । यो अस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।

उपस्थान मन्त्राः

ओ३म् । उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरूत्तमम् ।।

ओ३म् । उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः ।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ।।

ओ३म् । चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याग्नेः ।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ।

ओ३म् । तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं
जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः
स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।

अथ गुरूमन्त्र :

ओ३म्। भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

अथ समर्पणम्

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपया अनेन जपोपासनादि कर्मणा
धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ।

अथ नमस्करणम्

ओ३म् । नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।।

इति सन्ध्योपासना

देव यज्ञः

(हवन)

अग्निहोत्र है देवयज्ञ, सर्वोपरि कर्म सर्वहितकारी,
वायु मंडल होता है शुद्ध, सुख पाते सभी प्राणधारी ।
यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म सर्वदा, जो प्राणी अपनाता है,
लोक और परलोक सुधारे, मन इच्छा फल पाता है ।।

यज्ञारम्भः

गायत्री महामंत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः ।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

पद्यानुवाद

तूने हमें उत्पन्न किया,
पालन कर रहा है तू ।
तुझसे ही पाते प्राण हम,
दुःखियों के कष्ट हरता है तू ।।
तेरा महान तेज है,
छाया हुआ सभी स्थान ।
सृष्टि की वस्तु–वस्तु में,
तू हो रहा है विद्यमान ।।
तेरा ही धरते ध्यान हम,
माँगते तेरी दया ।
ईश्वर हमारी बुद्धि को,
श्रेष्ठ मार्ग पर चला ।।

निम्नलिखित मंत्रों से तीन बार अंजली में जल लेकर आचमन करें ।

अथः आचमनमंत्राः

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा । इससे एक
ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा । इससे दूसरा
ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा । इससे तीसरा

निम्नलिखित मंत्रों से शरीर के निम्नलिखित हिस्सों पर जल के छीटा देवें ।

अथः अंगस्पर्शमंत्राः

ओ३म् वाड्म आस्येऽस्तु । इस मंत्र से मुख
ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽस्तु । इस मंत्र से नासिका के दोनों छिद्र
ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु । इस मंत्र से दोनों ऑख
ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु । इस मंत्र से दोनों कान
ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु । इस मंत्र से दोनों बाहु
ओ३म् उर्वोर्मऽओजोस्तु । इस मंत्र से दोनो जंघा
ओ३म् अरिष्टानि मे अङ्गानि तनुस्तन्वा में सह सन्तु ।
इस मंत्र से सारे शरीर पर जल के छीटा देवें ।

अथः ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासनामंत्रा :

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रं तन्न आ सुव ।। । ।। **–यजुः**

तू सर्वेश ! सकल सुखदाता, शुद्ध स्वरूप विधाता है ।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते, शरण तेरी जो आता है ।।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से, हमको नाथ बचा लीजे ।
मंगलमय गुण कर्म पदार्थ, प्रेम सिन्धु हमको दीजे ।।

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।2।।

—यजुः

तू ही स्वयं प्रकाश सुचेतन, सुख स्वरूप शुभ त्राता है ।
सूर्य चन्द्रलोकादिक को, तू ही रचता और टिकाता है ।।
पहले था अब भी तू ही है, घट घट में व्यापक स्वामी ।
योग, भक्ति, तप द्वारा तुझको पावें हम अन्तर्यामी ।।

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छाया अमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।3।।

—यजुः

तू ही आत्मज्ञान बलदाता, सुयश विज्ञ जन गाते हैं ।
तेरी चरण शरण में आकर, भव सागर तर जाते हैं ।।
तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे विसराने में ।
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु ! तुझसे लगन लगाने में ।।

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव । य
ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।। 4।।

—यजुः

तूने अपनी अनुपम माया से, जग ज्योति जगाई है ।
मनुज और पशुओं को रचकर, निज महिमा प्रगटाई है ।।
अपने हिय सिंहासन पर, श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं ।
भक्ति भाव से भेंटें लेकर, शरण तुम्हारी आते हैं ।।

ओ३म् येन द्यौरूग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्व स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।। 5।।

—यजुः

तारे, रवि, चन्द्रादिक रचकर, निज प्रकाश चमकाया है ।
धरणी को धारण कर तूने, कौशल अलख जगाया है ।।
तू ही विश्व विधाता पोषक ! तेरा ही हम ध्यान धरें ।।
भक्ति भाव से भगवन् ! तेरे भजनामृत का पान करें ।।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।6।।

—ऋग्वेद

तुझसे बड़ा न कोई जग में, सब में तू ही समाया है ।
जड़ चेतन सब तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है ।।
हे सर्वोपरि विभो ! विश्व का तूने साज सजाया है ।
धन दौलत भरपूर दीजिए, यही भक्त को भाया है ।।

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।। 7।।

—यजुः

तू गुरू है, प्रजेश भी तू है, पाप पुण्य फल दाता है ।
तू ही सखा बन्धु मम तू ही, तुझसे ही सब नाता है ।।
भक्तों को इस भव बन्धन से, तू ही मुक्त कराता है ।
तू है अज, अद्वैत महाप्रभो ! सर्वकाल का ज्ञाता है ।।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ।। 8।।

—यजुः

तू है स्वयं प्रकाश रूप प्रभो ! सबका सिरजन हार तू ही ।
रसना निशिदिन रटें तुम्हीं को ! मन में बसना सदा तू ही ।।
कुटिल पाप से हमें बचाते, रहना हर दम दया निधान ।
अपने भक्त–जनों को भगवन् ! दीजे यही विशद वरदान ।।

इति ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना प्रकरणम् ।

।। अथ स्वस्तिवाचनम् ।।

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ।। 1।।
—ऋ0

स नः पितेव सूनवेग्ने सूपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये ।। 2।।
—ऋ0

स्वस्ति नो मिमीतामश्वीना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतना ।। 3 ।।
—ऋ0

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु न : ।। 4 ।।
—ऋ0

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रूद्रः पात्वंहसः ।। 5 ।। —ऋ0

स्वस्ति मित्रावरूणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ।। 6 ।।
—ऋ0

स्वस्ति पन्था मनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ।। 7 ।। —ऋ0

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरूगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।। 8 ।। —ऋ0

येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हा : ।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्तां आदित्यां अनुमदा स्वस्तये ।। 9 ।।
—ऋ0

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशु : ।
ज्योतिरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ।। 10।।
—ऋ0

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिहवृता दधिरे दिवि क्षयम् । तां आ
विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्यां अदितिं स्वस्तये ।। 11 ।।—ऋ0

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन ।
को वो अध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ।। 12 ।।

—ऋ0

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः । त
आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ।। 13 ।।

—ऋ0

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ।। 14 ।।

—ऋ0

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहे अहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ।
अग्निं मित्रं वरूणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरूतः स्वस्तये ।। 15 ।।

—ऋ0

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुषर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वत्रिामनागसमस्रवन्तीमा रूहेमा स्वस्तये ।। 16 ।।

—ऋ0

विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दूरेवाया अभिहुतः ।
सत्यया वो देवहुत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ।। 17 ।।

—ऋ0

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः ।
आरे देवा द्वेषो अस्मह्युयोतनोरूणः शर्म यच्छता स्वस्तये ।। 18 ।।

—ऋ0

अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ।। 19 ।।

—ऋ0

यं देवासो अवथ वाजसातौ यं शुरसाता मरूतो हिते धने ।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यिन्तमा रूहेमा स्वस्तये ।। 20 ।।

—ऋ0

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति ।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरूतो दधातन ।। 21 ।।

—ऋ0

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति ।
सा नो अमा सो अरणे निपातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ।। 22 ।।

—ऋ0

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण ऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माधशंसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।। 23 ।।

—यजु

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो ऽ दब्धासो अपरितासऽउद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ।। 24 ।।

—यजु

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजुयतां देवानां रातिरभि नो निवर्त्तताम् ।
देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।। 25 ।।

—यजु

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियन्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।। 26 ।।

—यजु

स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदा : ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।। 27 ।।

—यजु

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरंगै स्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु : ।। 28 ।।

—यजु

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ।। 29 ।।

—साम

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः ।
देवेभिर्मानुषे जने ।। 30 ।।

—साम

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रत : ।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ।। 31 ।।

—अ0

इति स्वस्तिवाचनम् ।

।। अथ शान्तिकरणम् ।।

ओ३म् शं न इन्द्रानी भवता मवोभिः शं न इन्द्रावरूणा रातहव्या ।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ।। 1।।

—ऋ0

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः ।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरूजातो अस्तु ।। 2।।

—ऋ0

शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः ।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ।। 3।।

—ऋ0

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मि़त्रावरूणावश्विना शम् ।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभिवातु वातः ।। 4।।

—ऋ0

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनीनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ।। 5।।

—ऋ0

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरूणः सुशंसः ।
शं नो रूद्रो रूद्रभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह श्रृणोतु ।। 6 ।।

—ऋ0

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ।। 7 ।।

—ऋ0

शं नः सूर्य उरूचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्तापः ।। 8।।

—ऋ0

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरूतः स्वर्का : ।
शं नो विष्णुः पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायु : ।। 9।।

—ऋ0

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ।। 10।।

—ऋ0

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः।।11।।

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ।। 12।।

—ऋ0

शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।
शं नो अपां नपात्पेरूरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपाः ।। 13।। —ऋ0

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शन्नो अस्तु द्विपदे चतुष्पदे ।। 14।।

—यजु0

शन्नो वातः पवतां शन्नस्तपतु सूर्य : । शन्नः कनिक्रदद् देवः
पर्जन्योऽअभि बर्षतु ।। 15।। —यजु0

अहानि शम्भवन्तु नः शं रात्रिः प्रति धीयताम् । शन्न इन्द्राग्नि
भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरूणा रातहव्या । शन्न इन्द्रापुषणा
वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः ।। 16।।

—यजु0

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ।। 17।।

—यजु0

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव
शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।। 18।। —यजु0

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः
शतम् श्रृणुयाम शरदः शतम् प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः
शतम् भूयश्च शरदः शतात् ।। 19।। —यजु0

यज्ञाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दुरंगमम् ज्योतिषां
ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ।। 20।। —यजु0

येन कर्माणपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः । यदपूर्वं
यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ।। 21।।

—यजु0

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ञोतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्न ऋते
किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ।। 22।। —यजु0

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहितममृतेन सर्वम् । येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवससंकल्पमस्तु ।। 23।। —यजु0

यस्मिन्नृचः साम यजुंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः ।
यस्मिँश्चितं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।। 24।।
—यजु0

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयते अभिशुभिर्वाजिन इव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।। 25।। —यजु0

स नः पवस्य शं गवे शं जनाय शमर्वते ।
शं राजन्नोषधीभ्य :।। 26।। —साम0

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्स्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ।। 27।।
—अ0

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञाता दभयं परोक्षात् ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ।। 28।।
—अ0

इति शान्तिकरणम् ।

अग्न्याधान मंत्रः

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । इस मंत्र से दीपक जलावें ।

निम्नलिखित मंत्र से कपूर जलाकर वेदी के बीच में अग्नि को धरें ।

ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा । तस्यास्ते पृथिवी देवयजनी पृष्ठे अग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ।।

अग्नि प्रदिप्त करने का मन्त्र

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सं सृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ।।

चन्दन की अथवा आम, पलाश आदि की आठ–आठ अंगुल की तीन समिधाएं घृत में डुबाकर उसमें से एक–एक निकालकर निम्नलिखित मंत्रों से एक–एक समिधा को अग्नि में चढ़ावें ।

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्बह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे–इदन्न मम ।। 1 ।। (इस मंत्र से पहली समिधा चढ़ाएं)

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्वोधयतातिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा ।। इदमग्नये इदन्न मम ।। 2 ।।
सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ।। 3 ।।

(दोनों मंत्र पढ़के दूसरी समिधा चढ़ाएं)

ओ३म् तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन बर्द्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा ।। इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम ।। 4 ।।

(इस मंत्र से तीसरी समिधा चढ़ाएं)

घृताहुति मंत्रः

नीचे लिखे मंत्र को पाँच बार पढ़के **पाँच** घृत की आहुति देनी है ।

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्बह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे–इदन्न मम ।।

तत्पश्चात् अंजली में जल लेकर वेदी के पूर्व आदि दिशा में और चारों ओर जल छिड़काएं ।

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व ।। इससे पूर्व दिशा में, दक्षिण से उत्तर की ओर

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व ।। इससे पश्चिम दिशा में,दक्षिण से उत्तर की ओर

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व ।। इससे उत्तर दिशा में, पश्चिम से पूर्व की ओर

निम्न मंत्र को पढ़ वेदी के चारों ओर, उत्तर–पूर्व दिशा (कलश) से प्रारंभ कर उत्तर–पूर्व दिशा में छोड़ें ।

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ।।

आघारावाज्यभागाहुति मंत्रः

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।। इदमग्नये इदन्न मम ।।
वेदी के उत्तर भाग में पश्चिम से पूर्व की ओर धार बनाते हुए अग्नि पर आहुति दें ।

ओ३म् सोमाय स्वाहा ।। इदं सोमाय इदन्न मम ।।
वेदी के दक्षिण भाग में पश्चिम से पूर्व की धार बनाते हुए अग्नि पर आहुति दें ।

आज्यभागाहुति मंत्रः

निम्न दोनों मंत्रों से वेदी के मध्य में दो आहुति दें ।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा ।। इदं प्रजापतये इदन्न मम ।।
ओ३म् इन्द्राय स्वाहा ।। इदं इन्द्राय इदं न मम ।।

प्रातःकालीन होम :

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।।1।।
ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।2।।
ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।।3।।
ओ३म् सजुर्देवेन सवित्रा सजूरूषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ।।4।।

सायंकालीन होम :

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।1।।
ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।।2।।
अब तीसरे मन्त्र को मन से उच्चारण करके आहुति दें ।
ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।।3।।
ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या । जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ।।4।।

प्रातः – सायंकालीन आहुति मंत्राः

निम्नलिखित मंत्रों से यजमान घी की आहुति दें एवं अन्य जन सामग्री की आहुति दें ।

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा ।।
इदमग्नये प्राणाय–इदन्न मम ।। 1।।
ओ३म् भुवर्वायवे अपानाय स्वाहा ।।
इदं वायवे अपानाय–इदन्न मम ।। 2।।
ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा ।।
इदमादित्याय व्यानाय–इदन्न मम ।। 3।।
ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा ।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः–इदन्न मम ।। 4।।

ओ३म् आपो ज्योती रसो अमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।। 5।।

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते । तया मामद्य मेधया अग्ने मेधाविनं कुरू स्वाहा ।। 6।।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा ।। 7।।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमेऽउक्तिं विधेम स्वाहा ।। 8।।

यहाँ तीन बार **"ओ३म् सर्व वै पूर्ण स्वाहा"** से दैनिक यज्ञ पूरा करें और अगर बृहद यज्ञ करना हो तो यहाँ पूर्णाहुति न करके क्रमानुसार दी गई विधि से यज्ञ संपन्न करें।

पूर्णाहुति प्रकरणम्

आघारावाज्यभागाहुति मंत्राः

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।। इदमग्नये–इदन्न मम ।।

इस मंत्र से वेदी के उत्तर भाग में धार बनाते हुए अग्नि पर आहुति दें ।

ओ३म् सोमाय स्वाहा ।। इदं सोमाय–इदन्न मम ।।

इस मंत्र से वेदी के दक्षिण भाग में पश्चिम से पूर्व की ओर

आज्यभागाहुति मंत्राः

निम्न दोनों मंत्रों से वेदी के मध्य में दो आहुति दें ।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा ।। इदं प्रजापतये–इदन्न मम ।।
ओ३म् इन्द्राय स्वाहा ।। इदं इन्द्राय–इदन्न मम ।।

व्याहृत्याहुति मंत्राः

निम्न मंत्रों से केवल घी की आहुति दें ।

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा ।। इदमग्नये–इदन्न मम ।। 1।।
ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा ।। इदं वायवे – इदन्न मम ।। 2।।
ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा ।। इदमादित्याय–इदन्न मम ।। 3।।
ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः–इदन्न मम ।। 4।।

स्विष्टकृदाहुतिमन्त्रः

निम्न मंत्र से भात की आहुति देवें ।

ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् ।। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु में । अग्नये स्विष्टकृते सुहुत हुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा ।। इदमग्नये स्विष्टकृते – इदन्न मम ।।

निम्न मंत्र को मन में बोलके मौन आहुति केवल घी की ही दें ।
ओ३म् प्रजापतये स्वाहा ।। इदं प्रजापतये–इदन्न मम ।।

अब निम्नलिखित मंत्र को पढ़के केवल घी की आहुति दें ।

आज्याहुतिमंत्राः (पवमानाहुतयः)

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः ।। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा ।। इदमग्नये पवमानाय – इदन्न मम ।। 1।।

ओ३म् भुर्भुवः स्वः । अग्निर्ऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः ।। तमी महे महागयं स्वाहा ।। इदमग्नये पवमानाय–इदन्न मम ।। 2।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्य स्वपा अस्मे वर्चः सुविर्यम् । दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा ।। इदमग्नये पवमानाय–इदन्न मम ।। 3।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा ।। इदं प्रजापतये–इदन्न मम ।। 4।।

अष्टाज्याहुति मंत्राः

निम्नलिखित मंत्रों को पढ़ते हुए घी एवं सामग्री की आहुति दें ।

ओ३म् त्वं नो अग्ने वरूणस्य विद्वान देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो बह्निनतमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांषि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा । इदमग्निवरूणाभ्याम्–इदन्न मम ।। 1।।

ओ३म् स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरूणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा । इदमग्निवरूणाभ्याम्–इदन्न मम ।। 2।।

ओ३म् इमं मे वरूण श्रुधी हवमद्या च मृळय । त्वामवस्युरा चके स्वाहा । इदं–वरूणाय–इदं न मम ।। 3।।

ओ३म् तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः अहे –ळमानो वरूणेह बोध्युरूशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा । इदं वरूणाय–इदन्न मम ।। 4।।

ओ३म् ये ते शतं वरूण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरूतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरूणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरूद्भ्यः स्वर्केभ्यः–इदन्न मम ।। 5।।

ओ३म् अयाश्चाग्ने स्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयासि । अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं स्वाहा । इदमग्नये अयसे–इदन्न मम ।। 6।।

ओ३म् उदुत्तमं वरूण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा । इदं वरूणाय ऽदित्यायाऽदितये च –इदन्न मम ।। 7।।

ओ३म् भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ । मा यज्ञं हिं सिष्टं मा यज्ञ –पतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा । इदं जातवेदोभ्याम् – इदन्न मम ।। 8।।

विशेष कामनाओं के लिए आहुतियाँ

ओ३म् । नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।।

ओ३म् ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भूंजिथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।।

ओ३म् त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि बर्धनम् ।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षियमामृतात् ।।

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् । आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं । मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ।।

ओ३म् मेधां में वरूणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु में स्वाहा ।।

तीन बार गायत्री मंत्र से आहुति दें ।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

पूर्णाहुति मंत्रः

शेष घृत–सामग्री से तीन बार पूर्णाहुति करें ।

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।
ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।
ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।

यज्ञोपरान्त

धृत पात्र में थोड़ा सा जल लेकर यज्ञाग्नि पर हल्का सा गर्म करके दोनो हाथों पर जल लगाकर यज्ञाग्नि पर तपा–तपा कर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपने मुख, नेत्र, ललाट, कपोलादि पर मर्दन करें ।

ओ३म् तेजो असि तेजो मयि धेहि । ओ३म् वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि ओ३म् बलमसि बल मयि धेहि । ओ३म् ओजो असि ओजो मयि धेहि ओ३म् मन्युरसि मन्यु मयि धेहि । ओ३म् सहो असि सहो मयि धेहि ।

अथ बलिवैश्यदेव विधि

निम्न दश मन्त्रों से घृतमिश्रित भात की, यदि भात न बना हो तो क्षार और लवण को छोड़ जो कुछ पाक में बना हो उसकी दश आहुतियां दें

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।। 1।।
ओ३म् सोमाय स्वाहा ।। 2 ।।
ओ३म् अग्निषोमाभ्यां स्वाहा ।। 3 ।।
ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यो स्वाहा ।। 4 ।।
ओ३म् धन्वन्तरये स्वाहा ।। 5 ।।
ओ३म् कुह्वै स्वाहा ।। 6 ।।
ओ३म् अनुमत्यै स्वाहा ।। 7 ।।
ओ३म् प्रजापतये स्वाहा ।। 8 ।।
ओ३म् द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ।। 9 ।।
ओ३म् स्विष्टकृते स्वाहा ।। 10 ।।

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों से बलिदान करें ।

ओ३म् सानुगायेन्द्राय नमः ।। इससे पूर्व
ओ३म् सानुगाय यमाय नमः ।। इससे दक्षिण
ओ३म् सानुगाय वरूणाय नमः ।। इससे पश्चिम
ओ३म् सानुगाय सोमाय नमः ।। इससे उत्तर
ओ३म् मरूद्भ्यो नमः ।। इससे द्वार
ओ३म् अद्भ्यो नमः ।। इससे जल

ओ३म् वनस्पतिभ्यो नमः ।। इससे मूसल और उखल
ओ३म् श्रियै नमः ।। इससे ईशान
ओ३म् भद्रकाल्यै नमः ।। इससे नैऋत्य
ओ३म् ब्रह्मपतये नमः ।। ओ३म् वास्तुपतये नमः ।। इससे मध्य
ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।। ओ३म् दिवाचारिभ्यो भूतेभ्यो नमः ।।
ओ३म् नक्तंचारिभ्यो भुतेभ्यो नमः ।। इससे उपर
ओ३म् सर्वात्मभूतये नमः ।। इससे पृष्ठ
ओ३म् पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ।। इससे दक्षिण

इसके अनन्तर लवणान्न अर्थात् दाल, भात, शाक रोटी आदि लेकर निम्न मंत्र से छः भाग अलग–अलग वांट के दे देवें ।

ओ३म् शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्। वायसानां कृमिणां च शनकैर्निर्वपेद् भुवि ।।

यज्ञ–प्रार्थना

पूजनीय प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए ।
छोड़ देवें छल–कपट को मानसिक बल दीजिए ।।
वेद की बोलें ऋचाएं सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हो मग्न सारे शोक सागर से तरें ।।
अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर उपकार को ।
धर्म–मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को ।।
नित्य श्रद्धा–भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें ।
रोग–पीड़ित विश्व के संताप सब हरते रहें ।।
भावना मिट जाए मन से पाप अत्याचार की ।
कामनाएं पूर्ण होवें यज्ञ से नर–नार की ।।
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए ।
वायु जल सर्वत्र हो शुभ गंध को धारण किए ।।
स्वार्थ–भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो ।
''इदन्न मम'' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ।।
हाथ जोड़ झुकाये मस्तक वन्दना हम कर रहे ।
नाथ करूणा रूप ! करूणा आपकी सब पर रहे ।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भागभवेत् ।।

सबका भला करो भगवान्, सब पर दया करो भगवान् ।।
सब पर कृपा करो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण ।।
सबको दो वेदों का ज्ञान, सबको दो बुद्धि का दान ।।

हे ईश सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी ।
सब हों निरोग भगवन् ! धन–धान्य के भण्डारी ।।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों ।
दुखिया न कोई होवें, सृष्टि में प्राणधारी ।।
हे नाथ सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी ।
सब हों निरोग भगवन् ! धन–धान्य के भण्डारी ।।

ब्रह्मस्तोत्र

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।

त्वमेव शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम् ।
त्वमेकं जगत्कर्तृ पार्तृ पहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ।।

भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्, गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम् ।
महोच्चै पदानां नियन्तु त्वमेकं, परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ।।

वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो, वयं त्वां जगत्साक्षिरूपं नमामः ।
सदेकं निधानं निरालम्बमीशं, भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ।।

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमोद्वैततत्वाय मुक्तिप्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ।।

प्रार्थना

हे परमपिता परमात्मा ! आपने हमें इतना अच्छा सुंदर स्वस्थ शरीर, इतनी अच्छी इज्जत, धन–दौलत, सुख–शान्ति, वैभव–परिवार सब कुछ दिया है प्रभु। इसके लिए हम आपका कोटि–कोटि हार्दिक धन्यवाद करते हैं और आपको नमन करते हैं , आपसे निवेदन करते हैं–यह सब कुछ सुचारू रूप से संचालित होता रहें, इसमें किसी प्रकार की विघ्न–बाधा न आवें प्रभु। हममें इतना सामर्थ्य दो जिससे हम यह सब कुछ सुचारू रूप से संचालित करने में सक्षम हो सकें ।

हे परमपिता परमात्मा ! हमें सन्मार्ग पर चलाओ, दृढ़ संकल्पी बनाओ एवं सद्–बुद्धि प्रदान करो । ऐसी कृपा करो जिससे हम सन्मार्ग पर चलते हुए दृढ़ संकल्प के साथ अपनी मेधा–बुद्धि, सद्–बुद्धि से व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय कल्याण करते हुए मानव–मात्र का कल्याण कर सकें । हमारा जीवन जीव–मात्र, प्राणी–मात्र के लिए हितकारी सिद्ध हों ।

ऐसी दया करो, ऐसी कृपा करो हे नाथ !

जन्म दिवस के मंत्र :

ओ३म् उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीबृधम् ।
अगन्म बिभ्रतोनमो दीर्घमायुः कृणोतु मे ।।

ओ३म् इन्द्र जीव सुर्य जीव देवा जीवा
जीव्यासहम् । सर्वमायुर्जीव्यासम् ।।

ओ३म् आयुषायुः कृतां जीवायुष्मान् जीव मा मृथा ।
प्राणेन आत्मन्वतां जीव मा मृत्योरूदगा वशम् ।।

ओ३म् जीवा स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् । उपजीवा स्थ उप–
जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् । सं जीवा स्थ सं जीव्यासं सर्वमायुः
र्जीव्यासम् । जीवला स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ।

ओ३म् तनूस्तन्वा मे सहे दत्तः सर्वमायुरशीय ।
स्योनं में सीद पुरूः पृणस्व पवमानः स्वर्गे ।।

ओ३म् सत्यामाशिषं कृणुता वयोधै कीरिं चिद्ध्यवथ स्वेभिरेवैः ।
पश्चा मृधो अप भवन्तु विश्वास्तद्रोदसी शृणुतं विश्वमिन्वे ।।

वैवाहिक वर्षगांठ :

ओ३म् मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु ।
मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ।।

ओ३म् समंजन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ ।
सं मातरिश्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ ।।

ओ३म् यदेतद् हृदयं तव तदस्तु हृदयं मम ।
यदिदं हृदयं मम तदस्तु हृदयं तव ।।

ओ३म् अन्नपाशेन मणिना प्राणसुत्रेन पृश्निना ।
बध्नामि सत्यग्रन्थिनामनश्च हृदयं च ते ।।

व्यापार–व्यवसाय

ओ३म् इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न ऐतु पुर एता नो अस्तु ।
नुदन्नरातिं परिपन्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम् ।।

ओ३म् ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति ।
ते मा जुषन्तां पयसा घृतेन यथा कृत्वा धनमाहराणि ।।

ओ३म् इध्मेनाग्न इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तरसे बलाय ।
यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम् ।।

ओ३म् येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।
तन्मे भूयो भवतु मा कनीयो अग्ने सातघ्नो देवान् हविषा निषेध ।।

ओ३म् येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।
तस्मिन् म इन्द्रो रूचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः ।।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।

ओ३म् भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्या भर ।
भूरि घेदिन्द्र दित्ससि ।।

ओ३म् इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे ।
पोषं रयिणामरिष्टिं तनुनां वाचः सुदिनत्व मह्नाम् ।।

ओ३म् श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोंकं म इषाण ।।

विशेष कामनाओं की पूर्ति के लिए निम्नलिखित मंत्रों का पाठ करें...

ओ३म् त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि बर्धनम् ।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षियमामृतात् ।।

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् ।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसं । मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ।।

ओ३म् सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ।।

ओ३म् अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिण : ।
निर्धनाः सधना सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ।।

ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।।

ओ३म् स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ।।

ओ३म् उर्जस्वती पयस्वती पृथिव्यां निमिता मिता ।
विश्वान्नं बिभ्रती शाले मा हिंसीः प्रतिगृह्णतः ।।

ओ३म् ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुंजिथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।।

ओ३म् पश्येम शरदः शतम्, जीवेम शरदः शतम् । बुद्धेम शरदः शतम् । रोहेम शरदः शतम् । पूषेम शरदः शतम् । भवेम शरदः शतम् । भूयेम शरदः शतम् । भूयसीः शरदः शतात् ।।

ओ३म् आ ब्रह्मण ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यो तिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धि र्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे – निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण–मेवावशिष्यते ।।

वाग्दान (सगाई)

वर कहें कन्या के माता पिता से...

ओ३म् भगमस्या वर्च आदिष्यधि वृक्षादिव स्रजम् ।
महाबुध्न इव पर्वतो ज्योक् पितृश्वास्ताम् ।।

कन्या के माता पिता कहें वर से...

ओ३म् एषा ते राजन् कन्या वधूर्नि धूयतां यम ।
सा मातुर्बध्यतां गृहे अथो भातृरथो पितुः ।।

ओ३म् एषा ते कुलपा राजन् तामु ते परि वद्मसि ।
ज्योक् पितृष्वासाता आशीर्ष्णः समोप्यात् ।।

ओ३म् असितस्य ते ब्रह्मण कश्यपस्य गयस्य च ।
अन्तः कोशमिव जामयो अपि नह्यामि ते भगम् ।।

कन्या के माता, पिता अथवा भाई निम्न मंत्र बोलकर
तिलक करें, मिठाई खिलावें तथा वर को स्वर्णमुद्रिका, एक नारियल,
गुड़, कुछ फल, वस्त्रादि प्रदान करें।

ओ३म् इदं हिरण्यं गुल्गुल्वयमोक्षौ अथो भगः ।
एते प्रतिकामाय वेत्तवे ।।

गोद भरना

निम्न मन्त्रों से कन्या के माता पिता और कन्या से भी आहुति दिलावें ।

ओ३म् वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति य ई वहाते महिषीमिषिराम् ।
आस्य श्रवस्याद्रथ आ च घोषात् पुरू सहस्रा परिवर्त्तयाते ।।

ओ३म् इयमग्ने नारी पतिं विदेष्ट सोमो हि राजा सुभगां कृणोति ।
सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु ।।

ओ३म् भगस्य नावमा रोह पूर्णामनुपदस्वतीम् ।
तपोपप्रतारय यो वरः प्रतिकाम्यः ।।

ओ३म् ते नयतु सविता नयतु पतिर्यः प्रतिकाम्यः ।
त्वमस्यै धेह्योषधो ।।

तत्पश्चात् निम्न मंत्र से वर की बहन या भौजाई कन्या का तिलक करें और उसकी झोली में नारियल, मिठाई, फल तथा वस्त्रादि देवें

ओ३म् इदं हिरण्यं गुल्गुल्वयमोक्षौ अथो भगः ।
एते प्रतिकामाय वेत्तवे ।।

शिलान्यास

नवीन शाला – भवन आदि के निर्माण कार्य के शुभारंभ या नींव रखने के शुभ अवसर पर निम्नलिखित मंत्रों से विशेष आहुतियॉ दें

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ।।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता वभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

ओ३म् उर्जस्वती पयस्वती पृथिव्यां निमिता मिता ।
विश्वान्नं बिभ्रती शाले हिंसीः प्रतिगृह्णतः ।।

ओ३म् ब्रह्मणा शालां निमितां कविभिर्निमितांमिताम् । इन्द्रानी रक्षतां शालाममृतौ सोम्यं सदः ।।

अब तीनों मन्त्रों के उच्चारण के साथ निश्चित स्थान पर तीन बार जल छिड़कें ।

ओ३म् आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न उर्ज्जे दधातन ।
महे रणाय चक्षसे ।।

ओ३म् यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ।
उशतिरिव मातरः ।।

ओ३म् तस्मा अरंगमाम् वो अस्य क्षयाय जिन्वथ ।
आपो जनयथा च नः ।।

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र को बोलकर शिलान्यास करावें अथवा रखावें ।

ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्य दातये ।
निहोता सत्सि बर्हिषि ।।

अथ सर्वरोगनाशक मंत्रः

(आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक दुःख निवारक मन्त्र)

ओ३म् त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि बर्धनम् ।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षियमामृतात् ।।

ओ३म् शीर्षक्तिं शीर्षामयं कर्णशूलं विलोहितम् ।
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।

ओ३म् कर्णाभ्यां ते कंगकूषेभ्यः कर्णशूलं विसल्पकम् ।
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।

ओ३म् यस्य हेतोः प्रच्यवते यक्ष्मः कर्णत आस्यतः ।
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।

ओ३म् यः कृणोति प्रमोतमन्धं कृणोति पूरूषम् ।
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।

ओ३म् अंग भेदमंगज्वरं विश्वांग्यं विसल्पकम् ।
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।

ओ३म् यस्य भीमः प्रतीकाश उद्धेपयति पूरूषम् ।
तक्मानं विश्वशारदं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।

ओ३म् य उरू अनुसर्पत्यथो एति गविनीके ।
यक्ष्मं ते अन्तरंगेभ्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।

ओ३म् हरिमाणं ते अंगेभ्यो अप्वामन्तरोदरात् ।
यक्ष्मोधामन्तरात्मनो बहिर्निर्मन्त्रयामहे ।।

ओ३म् आसो बलासो भवतु मूत्रं भवत्वामयत् ।
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् ।।

ओ३म् उदरात् ते क्लोम्नो नाभ्या हृदयादधि ।
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् ।।

ओ३म् ये अंगानि मदयन्ति यक्ष्मासो रोपणास्तव ।
यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् ।।

ओ३म् पादाभ्यां ते जानुभ्यां श्रोणिभ्यां परिभंसस: ।
अनुकादर्षणीयष्णिहाभ्य: शीर्ष्णो रोगमनीनशम् ।।

ओ३म् सं ते शीर्ष्ण: कपालानि हृदयस्य च यो विधु: ।
उद्यन्नादित्य रश्मिभि: शीर्ष्णो रोगमनीनशोंगभेदमशीम: ।।

ओ३म् मा नो निदे च वक्तवेर्योरन्धीरराव्णे ।
त्वे अपि क्रतुर्मम ।।

ओ३म् द्विषो नो विश्वतो मुखाति नावेव पारय ।
अप न शोशुचदघम् ।।

ओ३म् स न सिन्धु नावयाति पर्षा स्वस्तये ।
अप न: शोशुचदघम् ।।

ओ३म् न त्वा रासयाभि शस्तये वसो न पापत्वाय सन्त्य ।
न मे स्तोता मतीवा न दुर्हित: स्यादग्ने न पापया ।।

ओ३म् मा नो अग्ने अवसृजो अघाया विश्यवे रिपवे दुच्छुनाये ।
मा दत्वते दशते मादते नो मा रीषते सहसावन्परादा: ।।

ओ३म् पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात्पाहि धूर्त्तेररूषो अघायो: ।
त्वा युजा पृतनायूंरभिष्याम् ।।

ओ३म् मा विदन परिपन्थिनो य आसीदन्ति दम्पती ।
सुगेन दुर्गमतीतामप द्रान्तरातय: ।।

ओ३म् यः सपत्नो यो असपत्नो यश्च द्विषंछपाति नः ।
देवास्तं सर्वे धुर्वन्तु ब्रह्मवर्म ममान्तरम् ।।

ओ३म् रक्षा मा किर्नो अघशंस ईशत मा नो दुःशंस ईशत ।
मा नो अद्य गवां स्तेनो मा अवीनां वृकं ईशत ।।

ओ३म् ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये
चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये । वागोजः सहौजोमयि प्राणापानौ ।।

ओ३म् यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वाति तृष्णं बृहस्पतिर्मे
तद्दधातु । शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ।।

ओ३म् दृते दृं ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

ओ३म् नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्तर्चिषे ।
अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यं शिवो भव ।।

अन्त्येष्टि क्रिया

उठाला–क्रिया–चौथा आदि के मन्त्र

ओ३म् वायुरनीलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम् ।
ओ३म् क्रतो स्मर। क्लिवे स्मर। कृतं स्मर ।।

ओ३म् प्रजापतिः सम्भृयमाणः सम्राट् सम्भृतो वैश्वदेवः संसन्नो धर्मः
प्रवृक्तस्तेज उद्यत आश्विनः पयस्यनीयमाने पौष्णो विस्पन्दमाने
मरूतः क्लथन् । मैत्रः शरसि सन्ताय्यमाने वायव्यो हृयमाणः आग्नेयो
हूयमानो वाग्द्युतः ।।

ओ३म् सविता प्रथमे अहन्नग्निद्वितीये वायुस्तृतीये । आदित्यश्चतुर्थे
चन्द्रमाः पंचम ऋतुः षष्ठे मरूतः सप्तम् बृहस्पतिरष्टमे मित्रो नवमे
वरूणो दशम इन्द्र एकादशे विश्वेदेवा द्वादशे ।।

ओ३म् चित् पूर्व ऋतसाप ऋतावान ऋतावृधः ।
पितृन् तपस्वतो यम तांश्चिदेवापि गच्छतात् ।।

ओ३म् सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्यां लोकमिच्छतु ।
तन्मे युज्यन्तामुस्रियाः ।।

ओ३म् विभक्तारं हवामहे वसोस्चित्रस्या राधसः ।
सवितारं नृचक्षसम् ।।

पाक्षिक यज्ञ ::

पौर्णमासी और अमावस्या के दिन यज्ञ में मीठा भात, खीर, लड्डू आदि की आहुति देवें ।

पौर्णमासी :

स्थालीपाक की तीन आहुतियॉ :

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।
ओ३म् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ।
ओ३म् विष्णवे स्वाहा ।

निम्न मंत्रों से केवल घी की आहुति दें ।

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा ।। इदमग्नये–इदन्न मम ।। 1।।
ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा ।। इदं वायवे इदन्न मम ।। 2।।
ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा ।। इदमादित्याय–इदन्न मम ।। 3।।
ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः–इदन्न मम ।। 4।।

ओ३म् पूर्णा पश्चादुत पूर्ण पुरस्तादुन्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय ।
तस्यां देवैः संवसन्तो महित्वा नाकस्य पृष्ठे समिषा मदेम ।।

ओ३म् वृषभं वाजिनं वयं पौर्णमासं यजामहे ।
स नो ददातक्षितां रयिमनुपदस्वतीम् ।।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जजान ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।

ओ३म् पौर्णमासी प्रथमा यज्ञियासीदह्नां रात्रिणामतिशर्वरेषु ।
ये त्वां यज्ञैर्यज्ञिये अर्धयन्त्यमी ते नाके सुकृतः प्रविष्टाः ।।

अमावस्या :

स्थालीपाक की तीन आहुतियॉ :

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।
ओ३म् इन्द्राग्निभ्यां स्वाहा ।
ओ३म् विष्णवे स्वाहा ।

निम्न मंत्रों से केवल घी की आहुति दें ।

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा ।। इदमग्नये–इदन्न मम ।। 1।।
ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा ।। इदं वायवे इदन्न मम ।। 2।।
ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा ।। इदमादित्याय–इदन्न मम ।।3।।
ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः–इदन्न मम ।। 4।।

ओ३म् अमावस्ये न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जजान ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।

ओ३म् यत् ते देवः अकृण्वन् भागधेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा ।
तेना नो यज्ञं पिपृहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुविरम् ।।

ओ३म् अहमेवास्म्यमावास्या–3–मामावसन्ति सुकृतो मयिमे ।
मयि देवा उभये साध्याश्चेन्द्र ज्येष्ठाः समगच्छन्त सर्वे ।।

ओ३म् आगन् रात्री संगमनी वसूनामूर्ज पुष्टं वस्वावेशयन्ती ।
अमावस्यायै हविषा विधेमोर्ज दुहाना पयसा न आगन् ।।

दिनचर्या के मन्त्र

प्रातःकाल शयन से उठकर सर्वप्रथम निम्नलिखित पाँच मंत्रों का पाठ करें ।

ओ३म् प्रातरग्निं प्रतरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरूणाप्रातःरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रूद्रं हवेम ।। 1 ।।

ओ३म् प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजाचिद्यं भगं भक्षित्याह ।। 2 ।।

ओ३म् भगप्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवन्तः स्याम ।। 3 ।।

ओ३म् उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम ।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ।। 4 ।।

ओ३म् भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह ।। 5 ।।

रात्रि में सोने से पूर्व निम्नलिखित मंत्रों का पाठ करें ।

ओ३म् यज्ञाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दुरंगमम् ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ।। 01।।

ओ३म् येन कर्माणपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ।। 02।।

ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ञोतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ।। 03।।

ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहितममृतेन सर्वम् । येन यज्ञ–स्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवससंकल्पमस्तु ।। 04 ।।

ओ३म यस्मिन्नृचः साम यजुंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः ।
यस्मिँश्चितं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।। 05 ।।

ओ३म सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयते अभिशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ।। 06 ।।

भोजन से पहले

ओ३म् अन्नपते अन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्र प्रदातारं तारिष उर्ज्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ।।

भोजन के पश्चात

ओ३म् मोघमन्नंविन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्सतस्य ।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ।।

यात्रा करने के मन्त्र

ओ३म् स्वस्ति पन्था मनुचरेम सूर्या चन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ।।

ओ३म् ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावा पृथिवी संचरन्ति ।
ते मा जुषन्तां पयसा घृतेन यथा क्रीत्वा धनमाहराणि ।।

ओ३म् सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते नत्रावखादो अस्ति वः

यज्ञोपवीत धारण मंत्र

ओ३म् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।

भजन लहरी

त्याग तपस्या से पवित्र, परिपुष्ट हुआ जिसका तन है,
भक्त को भगवान से मिलाता, दूत वो भजन है ।
बुरे कार्यों में नहीं फँसता, पुलकित होता उसका मन है,
चिन्ता छोड़ जगत् की, जो नित गाता भजन है ।।

।। भजन सूची ।।

क्र0	विषय	पृ0 संख्या
01,	शरण प्रभु की आओ रे..	50
02,	ये मत कहो प्रभु से..	50
03,	कुछ पल की जिन्दगानी..	51
04,	जिन्दगी में सदा मुस्कुराती रहो..	51
05,	प्रभु जी है एक दातार..	52
06,	विनय यही मेरे भगवन्..	52-53
07,	कर दे थोड़ी कृपा..	53
08,	उठ जाग मुसाफिर..	54
09,	वैदिक विचारों का उदयन होगा..	54-55
10,	देख तेरे ये संसार की हालत..	55
11,	हम कभी माता पिता का..	56
12,	ओ३म् सुमिर ले..	56-57
13,	रखोगे जिस हाल में..	57
14,	न तो देर है न अंधेर है..	58
15,	ओ३म् नाम से तूने बन्दे..	58-59
16,	दुनिया बनाने वाले..	59
17,	ईश्वर जो कुछ करता है..	60
18,	इक झोली में फूल..	60-61
19,	तेरे नाम का सुमिरण..	61
20,	दया वही है करता..	62
21,	प्रभु इतना तो बतला..	62
22,	तू है सच्चा पिता..	63
23,	किसी के काम जो आये..	63
24,	ओं है जीवन हमारा..	64
25,	कब दूर प्रभु है हम से..	64
26,	दो दिन का मेला है..	65
27,	प्रभु की कृपा जिस पर..	65
28,	हम सब मिलके दाता..	66
29,	मेरे देवता मुझको..	66
30,	तुम्हीं बताओ भगवन्..	67
31,	तू कर प्रभु से प्रीत..	67
32,	मैं सत्संग में प्रभु आकर..	68
33,	पतित पावन नाम..	68
34,	प्रभु बैठे तुम कहाँ..	69
35,	ओं नाम रस बरसे..	69

क0	विषय	पृ0 संख्या
36,	दो घड़ी भगवान..	70
37,	ओं सच्चिदानन्द स्वरूप	70
38,	बुराईयों को कभी..	71
39,	तारीफ उस प्रभु की..	71
40,	आनन्द स्रोत बह रहा..	72
41,	इक बार भजन कर ले..	72
42,	प्रभु की भक्ति में..	73
43,	मुझे मिल गया..	73
44,	पार न लगोगे..	74
45,	जीवन का ये सफर..	74
46,	सारे जहॉ के मालिक..	75
47,	प्रभु में श्रद्धा..	75
48,	ओं है परमपिता का	76
49,	सुन ले रे मन..	76
50.	मुझे इस दुनिया में..	77
51,	आया शरण प्रभु..	77
52,	नमस्कार भगवान..	78
53,	जय सत् चित आनन्द..	78
54,	हे ज्ञानवान भगवान	79
55,	एक बार बोलो रे..	79
56,	इतनी शक्ति..	80
57,	अब सौंप दिया..	80
58,	साथ ले लो पिता..	81
59,	ओं का सुमिरन	81-82
60,	उस प्रभु की..	82
61,	गाए जा गाए जा..	83
62,	मात पिता गुरू..	83-84
63,	आ दरश दिखा दे..	84
64,	मैली चादर ओढ़/ करता रहूँ गुणगान..	85
65,	सोचो जरा करो..	86
66,	द्वार तेरे है आके..	87
67,	ओं ओं बोलिए..	87
68,	हम सब पर	88
69,	बहुत प्यार करते..	88-89
70,	आसरा इस जहां..	89
71,	मुख से ओं ओं..	90
72,	तेरे दर को छोड़..	90-91

क्र0	विषय	पृ0 संख्या

73,	मिलता है सच्चा	91
74,	मुझमें ओं तुझमें	92
75,	ईश्वर तुम्ही दया..	92
76,	संसार में जिसका..	93
77,	भगवान मेरी नैया..	93
78,	मेरे मालिक के..	94
79,	क्या भरोसा है..	94-95
80,	परमपिता परमेश्वर..	95
81,	दुनिया से मैं हारा..	95
82,	सॉझ सबेरे लेकर..	96-97
83,	तुम मेरे जीवन..	97
84,	मुझे तूने दाता..	98
85,	सुख भी मुझे..	99
86,	निज गौरव को..	99
87,	सजधज कर मौत..	100
88,	सृष्टि से पहले..	100-101
89,	प्रभु तेरी शरण..	101
90,	मानव तू अगर..	102
91,	तुम्ही हो माता..	102
92,	भरोसा कर तू..	103
93,	मानुष जन्म अनमोल..	103
94,	कौन कहे तेरी..	104
95,	वेद पढ़ो और..	104-105
96,	इस कुल का..	105
97,	शुभ विवाह की..	106
98,	ऐ ऋषि दयानन्द..	107
99,	ऋषि दयानन्द..	107
100,	सूरज बन दूर किया..	108
101,	धन्य है तुझको..	108-109
102,	महापुरूष जनम् लेंगे..	109
103,	सौ बार जनम् लेंगे..	110
104,	यज्ञ महिमा..	127
105,	ओ३म् ध्वज गीत..	128
106,	राष्ट्र गीत..	129
107,	शान्ति कीजिए..	130
108,	ओ३म् जय जगदीश..	130

शरण प्रभु की...

शरण प्रभु की आओ रे, यही समय है प्यारे ।
छल कपट और झूठ को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ रे ।।
उदय हुआ ओ3म् नाम का भानु, आओ दर्शन पाओ रे ।
प्रभु की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे ।
मानुष जन्म अनमोल है यह, बृथा न इसे गंवाओ रे ।
कर लो प्रभु के नाम का सुमिरन, अंत को न पछताओ रे ।
धन्य प्रभु जो सबको पाले, मत उसको बिसराओ रे ।
छोटे बड़े सब मिलके खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे ।।

ये मत कहो प्रभु से,

ये मत कहो प्रभु से, मेरी मुश्किलें बड़ी है ।
ये मुश्किलों से कह दो, मेरा खुदा बड़ा है ।।

आती है ऑधियां तो, धर उनका खैर मकदम,
तूफान से ही लड़ने, प्रभु ने तुझे गढ़ा है ।।

अग्नि में तपके सोना, है और भी निखरता,
दुर्लभ को पार करके, हिमालय कोई चढ़ा है ।।

लायेगी रंग मेहनत, आखिर तुम्हारी एकदिन,
होगा विशाल तरूवर, वो बीज जो पड़ा है ।।

वो सर्व शक्तिमान, जब साथ है हमारे,
हर काम उनके रहते, हरगिज हुआ पड़ा है ।।

कभी हारना ना, हिम्मत का कदम बढ़ाओ,
हजारों कदम बढ़ाते, वो सामने खड़ा है ।।

कुछ पल की जिन्दगानी

कुछ पल की जिन्दगानी, इक रोज सबको जाना ।
वर्षों की तू क्यों सोचे, पल का नहीं ठिकाना ।।

मल मल के तूने अपने, तन को जो है निखारा,
इत्रों की खुशबूओं से, महके शरीर सारा ।
काया न साथ देगी, ये बात न भूलाना ।।

मन है हरि का दर्पण, मन में इसे बसा ले,
करके तू कर्म अच्छे, कुछ पुण्य धन कमा ले ।
कर दान और धर्म तू, प्रभु को अगर है पाना ।।

आयेगी वो घड़ी जब, कोई न साथ होगा,
कर्मों का तेरे सारे, इक–इक हिसाब होगा ।
ये सोच ले अभी तू, फिर वक्त ये न आना ।।

जिन्दगी में सदा मुस्कुराते रहो,

जिन्दगी में सदा मुस्कुराते रहो,
फॉसले कम करो, दिल मिलाते रहो ।।

दर्द जैसा भी हो, ऑखे नम न करो,
रात काली सही, कोई गम न करो।
इक सितारा बनो, जगमगाते रहो ।।

बॉटना है अगर, बॉट लो हर खुशी,
गम न जाहिर करो, तुम नादानों कहीं ।
दिल की गहराई में, गम छिपाते रहो ।।

ज्ञान अनमोल है, यूं ना खोना कभी,
इसकी हर बूंद है, मोतियों से भरी ।
इसको हर ऑख से तुम चुराते रहो ।।

बरसा दाता सुख बरसा

बरसा दाता सुख बरसा, आँगन आँगन सुख बरसा ।
चुन चुन कॉटे नफरत के, प्यार अमन के फूल खिला ।।

तन से है कोई दुखी, मन से कोई है दुखी ।
हे प्रभु दया करो, सारा जहॉ हो सुखी ।
हर पाल मॉगू यही दुआ, ऑगन ऑगन सुख बरसा ।।
बरसा....

झोलियाँ सुखों की तुम, सबकी दाता भर ही दो ।
हे प्रभु तुम हमें, सब्र और शुक्र भी दो ।
सबके दुखों की तू ही दवा । ऑगन ऑगन सुख बरसा ।।
बरसा.....

बैर क्लेश को मिटा, दाता सकल संसार से ।
नाम का स्मरण करें, मिलके सारे प्यार से ।
मानव से मानव हो ना जुदा, आँगन आँगन सुख बरसा ।।
भाई से भाई हो ना जुदा, आँगन आँगन सुख बरसा ।।
माँ से बेटा हो ना जुदा, आँगन आँगन सुख बरसा ।।

बरसा दाता सुख बरसा, आँगन आँगन सुख बरसा ।
चुन चुन काँटे नफरत के, प्यार अमन के फूल खिला ।।

प्रभु जी है एक दातार

प्रभु जी है एक दातार, एकमात्र सहारा है ।
फिर क्यों तू ऐ मूरख, दर–दर का मारा है ।।

है कौन जो दुनियॉ में, प्रभु से न मॉगां हो,
उलझी हुई दुनियॉ से, दर प्रभु के न भागा हो ।
दर प्रभु के न भागा हो ।।
इच्छा न खत्म होती, मॉगता जग सारा है ।।

रिश्तों के घेरे में, हर कोई पराया है,
हर बिछुड़े हुए को, प्रभु ने अपनाया है ।
प्रभु ने अपनाया है ।।
भगवान को न भूलों, जीवनहारा है ।।

कभी धूप है सर पर तो, फिर तो कभी है छॉव,
इन दोनों के बीच होकर, चलती है जीवन नाव ।
चलती है जीवन नाव ।।
चिन्ता न करो ''वसु'', वो तो खेवनहारा है ।।

विनय यही मेरी भगवन्

विनय यही मेरी भगवन्, मेरा परित्याग न करना ।
मेरी उलझन को सुलझाना, मेरा परित्याग न करना ।।

रूलाना अपने विरह में, हॅसाना अपने दर्शन में ।
भूलाना भूल सब मेरी, मेरा परित्याग न करना ।।

चलाना चाल अपनी ही, बताना बात अपनी ही ।
कराना अपनी ही करणी, मेरा परित्याग न करना ।।

बिठाना संग अपने ही, चढ़ाना रंग अपना ही ।
सुनाना वेद की बंशी, मेरा परित्याग न करना ।।

पिलाना अपना तो मामृत, खिलाना गात गायत्री ।
जलाना वासना सारी, मेरा परित्याग न करना ।।

कर दे थोड़ी कृपा

कर दे थोड़ी कृपा प्रभुजी तेरा क्या घट जाएगा,
ये बालक भी तर जाएगा ।
छोड़ तेरा द्वार प्रभुजी और कहाँ ये जाएगा ।
ये बालक भी तर जाएगा ।।

है पुराना ये रिश्ता हमारा जो, उसे मैं याद करूँ,
एहसान कर दो तुम, बालक तुम्हारा हूँ, अब सिर पर हाथ धरो ।
हो.....प्यार का रिश्ता, प्यार का रिश्ता हमारा टूटने न पाएगा ।।
ये बालक भी तर जाएगा ।।

दे दिया तूने सबको सहारा, जो द्वारे आया है,
भर दिया दामन, सबका खुशी से, जो अर्जी लाया है ।
हो..... मुझको देने से, मुझको देने से खजाना कम नहीं हो जाएगा,
ये बालक भी तर जाएगा ।।

कश्ती हमारी ये तेरे हवाले है, उसे तुम पार करो,
गर दे दिया तूने इसको किनारा, तो ये विश्वास करो ।
हो..... ये तेरा दरबार, ये तेरा दरबार जय जयकारों से गूंज जाएगा,
ये बालक भी तर जाएगा ।।

उठ जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहॉ जो सोवत है ।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है वो खोवत है ।।

टुक नींद से अखियॉ खोल जरा,
और अपने प्रभु से ध्यान लगा ।
यह प्रीत करण की रीत नहीं, प्रभु जागत है तू सोवत है ।।

जो कल करना हो सो आज कर ले,
जो आज करना सो अब कर ले ।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया, फिर पछताये क्या होवत है ।।

नादान भुगत करनी अपनी,
ओ पापी पाप में चैन कहॉ ।
जब पाप की गठरी सीस धरी, फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है ।।

वैदिक विचारों का उदयन होगा

वैदिक विचारों का उदयन होगा, सुन्दर हमारा जीवन होगा ।
लहराता मुस्काता मानस, मधुवन होगा ।।

प्रेम हो परस्पर ऐसा देश वो बसाएंगे ।
मानवता का पाठ, हम सबको पढ़ाएंगे ।।
हर दिल में ईश्वर का, चिन्तन होगा ।।

यज्ञ की सुगन्ध से हम, दुर्गन्ध को मिटाएंगे ।
स्वस्थ और संयमी हम जीवन को बनाएंगे ।।
पावन यहॉ का, कण कण होगा ।।

ढूंढने से मिले नहीं, चोर जार कोई भी ।
धर्म के विरूद्ध ना हो, व्यवहार कोई भी ।।
सत्य धर्म का, पालन होगा ।।

सत्यपाल ऋषिवर की, पूरी ये आवाज हो ।
ग्राम–ग्राम नगर–नगर, आर्य समाज हो ।।
फिर से मधुर साम, गायन होगा ।।

देख तेरे ही मन मंदिर में..

देख तेरे ही मन मंदिर में, बसा हुआ भगवान ।
अरे तू कर उसकी पहचान ।।

घट–घट में वो बोलनहारा, सारे जग का सृजनहारा ।
सकल जगत उसका है पखारा, वो है सारे जग से न्यारा ।।
सच्चा माता पिता है वो ही, एक उसी को जान ।।

है घट घट में वास उसी का, सूरज में प्रकाश उसी का ।
है सबके सिर हाथ उसी का, जीवन में है साथ उसी का ।।
भूल के उसको भटक रहा क्यो, इधर उधर नादान ।।

चेत अरे माया के अन्धे, डाल रहा यम सिर पर फनदे ।
प्रभु चरणों में आजा बन्दे, तज दे जग के झूठे धन्धे ।।
हो जाएगी प्रभु भजन से, सब मुश्किल आसान ।।

अब तो आवागमन मिटाले, मानव जीवन सफल बना ले ।
ज्ञान गंगा में आज ही नहा ले, ब्रह्म ज्योति में ज्योति मिला ले ।।
सच्चे प्रभु की कृपा से, पावे पद निर्माण ।।

हम कभी माता पिता का..

हम कभी माता पिता का ऋण चुका सकते नहीं ।
इनके तो एहसान हैं इतने गिना सकते नहीं ।।

यह कहॉ पूजा में शक्ति, यह कहॉ फल जाप का,
हो तो हो इनकी कृपा से खात्मा संताप का ।
इनकी सेवा से मिले धन ज्ञान बल लम्बी उमर,
स्वर्ग से बढ़कर है जग में आसरा मॉ बाप का ।
इनकी तुलना में कोई वस्तु भी ला सकते नहीं ।।

देख ले हमको दुखी तो भर ले अपने नैन ये,
एक हमारे सुख की खातिर तड़पते दिन रैन ये ।
भूख लगती प्यास न और नींद भी आती नहीं,
कष्ट हो तन पे हमारे हो उठे बेचैन ये ।
इनसे बढ़कर देवता भी सुख दिला सकते नहीं ।।

पढ़ लो वेद और शास्त्र का ही एक यह भी मर्म है,
योग्यतम् सन्तान का यह सबसे उत्तम कर्म है ।
जगत में जब तक जीए सेवा करे मॉ बाप की,
इनके चरणों में यह तन मन धन लुटाना धर्म है ।
यह 'पथिक' वो सत्य है सत्य है जिसको भूला सकते नहीं ।।

ओ३म् सुमिर ले..

ओ३म् सुमिर ले, झोली भर ले, हो जा मालामाल ।
साथ यही जाना है ।
जाना है यही जाना है, यह अनमोल खजाना है ।।

खाली हाथों आया तू, साथ नहीं कुछ लाया तू ।
आकर यही कमाया तू, सब कुछ यही लूटाया तू ।।
जायेगा क्या साथ तुम्हारे, सोच जरा तत्काल ।।

धन दौलत जो पास तेरे, उसके हिस्सेदार खड़े ।
मौका मिलते ही उस पर, सबके सब ये टूट पड़े ।।
तेरी चिता ठण्डी होने से, पहले लेंगे निकाल ।।

छीन सके ना कोई भी, ओ3म् नाम ऐसा धन है ।
इसे संजोने के खातिर, प्रभु ने दिया तुझे तन है ।।
मन की तिजोरी कभी न भरती चाहे जितना डाल ।।

जब तक श्वॉस चले तेरी, बंदे ओ3म् सुमिर ले तू ।
बन्दे उस घर जाने की, कुछ तैयारी कर ले तू ।।
कितनी पूंजी पास है तेरे, खुद से पूछ सवाल ।।

रखोगे जिस हाल में..

रखोगे जिस हाल में, रह लेंगे सरकार ।
ये तो निश्चित है प्रभुवर, छोड़ूँ न तेरा द्वार ।।

भले बुरे की सोच तुम्हें है, लिया तुम्हारा शरणा है,
जेहिं विधि होये प्रभु हित मेरा, वह तुमको ही करना है ।
मुझसे ज्यादा तू समझे, क्या है मुझको दरकार ।।

हे मेरे तन मन के स्वामी, मुझे भरोसा तेरा है,
दीन दुखी का साथ निभाते, ये तो अनुभव मेरा है ।
प्रभु तेरी कृपा बरसते, मैने देखा है कई बार ।।

अन्तर्मन के अन्तर्यामी, तुमको क्या बतलाऊँ मैं,
हर कण–कण में वास तुम्हारा, तुमको क्या दिखलाऊँ मैं ।
हर तकलीफ का प्रभुवर, तेरे हाथों में उपचार ।।

सौंप दिया है तुमको जीवन, मैं क्यों चिन्ता फिकर करूँ,
दिल का हाल सुने दिलवाला, दुनियां से क्या जिक्र करूँ ।
भक्तों क्यों दर–दर भटको, जब मालिक है दिलदार ।।

न तो देर है न अंधेर है

न तो देर है न अंधेर है, तेरे कर्मो का ये सब फेर है ।

लाखों तीरथ जाके नहा ले, मिटते नहीं कभी कर्मों के काले ।
नेकी के मन में ज्योति जला ले, और जीवन में कर ले उजाले ।।
कर ले उजाले ।।

नेकी जगत् में जो तू करेगा, सर पे तेरे वो हाथ धरेगा ।
मुख से कुछ भी न कहना पड़ेगा, बिन माँगे प्रभु हाथ भरेगा ।।
हाथ भरेगा ।।

अपना कर्म ही सुख देता है, अपना कर्म ही दुःख देता है ।
कर्म बना जीवन देता है, कर्म मिटा जीवन देता है ।।
जीवन देता है ।।

हमें ही विजय सुन चलना न आए, प्रभु तो सभी को चलना सिखाए
वो तो किसी को न तरसाये, हमको ही दिल से कहना न आये ।।
कहना न आये ।।

ओ३म् नाम से तूने बन्दे..

ओ३म् नाम से तूने बन्दे, क्यूँ अपना मुख मोड़ा,
दौड़ा जाए रे समय का घोड़ा ।।

एक दिन बिता खेल–कूद में, एक दिन मौज में सोया,
देख बुढापा आया तो क्यूँ, पकड़ के लाठी रोया ।
अब भी ओ3म् सुमिर ले नहीं तो, पड़ेगा काल हथौड़ा ।।

अमृतमय है नाम हरि का, तू अमृतमय बन जा,
मन में ज्योति जला ले, तू बस हरि के रंग में रंग जा ।
डोर जीवन की सौंप हरि को, नहीं पड़ेगा कोड़ा ।।

क्या लाया क्या ले जायेगा, क्या पाया क्या खोया ,
वैसा ही फल मिले यहॉ पर, जैसा तूने बोया ।
काल शीश पर बैठा इसने, किसी को न है छोड़ा ।।

मन के कहे जो चलते हैं, वो दुःख ही दुःख है पाते,
माया के वश में जो है रहते, घोर नरक को जाते ।
जो भी अगर–मगर बनते थे, उनका भी भ्रम तोड़ा ।।

दुनिया बनाने वाले..

दुनिया बनाने वाले, कैसी तेरी माया है ।
कहीं बरसात, कहीं धूप कहीं छाया है ।।

पर्वतो का चोटियां हैं आसमॉ को चूमती,
रेशमी घटाएँ काली, पर्वतों पे घूमती ।
कहीं चॉद सूरज, कहीं सागर को बनाया है ।।
कहीं बरसात, कहीं धूप कहीं छाया है ।।

गुजरते पलों की टोली, यही गुनगुना रही,
रूके न समय की गाड़ी धीरे धीरे जा रही ।
कल आज और कल का तूने चक्कर क्या चलाया है ।।
कहीं बरसात, कहीं धूप कहीं छाया है ।।

अच्छे बुरे कर्मों की है पूँजी सबके साथ में,
सभी वह खिलौने जिनकी चाबी तेरे हाथ में ।
नाचना पड़ा है तूने जैसे भी नचाया है ।।
कहीं बरसात, कहीं धूप कहीं छाया है ।।

कौन सी जगह है खाली कहॉ तेरा वास है,
कहीं तू नहीं है लेकिन फिर भी सबके पास है ।
किसी ने भी आज तक न, इस उलझन को सुलझाया है ।।
कहीं बरसात, कहीं धूप कहीं छाया है ।।

ईश्वर अच्छा करता है..

ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है ।
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है ।।

जब से दुनियां बनी है तब से रोज बदलती है ।
जो शै आज यहॉ है कल वह आगे चलती है ।।
देख के अदला बदली तू आहें क्यों भरता है ।।

दुःख सुख आते जाते रहते सब के जीवन में ।
पतझड़ और बहारें दोनों जैसे गुलशन में ।।
चढ़ता है तूफान कभी और कभी उतरता है ।।

कितनी लंबी रात हो फिर भी दिन तो आएगा ।
जल में कमल खिलेगा फिर से वह मुसकाएगा ।।
देता है जो कष्ट वही कष्टों को हरता है ।।

वह ही दाना फलता है जो मिट्टी में मिल जाए ।
सहे पथिक जो कॉटे वह ही मंजिल अपनी पाए ।।
भट्टी में पड़ कर सोने का रंग निखरता है ।।

इक झोली में फूल पड़े हैं..

इक झोली में फूल पड़े हैं, इक झोली में कॉटे रे कोई कारण होगा
रे कोई कारण होगा । हॉ रे कोई कारण होगा ।।
तेरे बस में कुछ भी नहीं हैं, बांटनेवाला बॉटे रे,
अरे कोई कारण होगा ।।

पहले बनती है तकदीरें, फिर बनते हैं शरीर ।
ये तो प्रभु की कारीगरी है, तू क्यों है गंभीर ।।
अरे कोई कारण होगा ।।

नाग भी डस ले तो मिल जाए, किसीको जीवन दान ।
चींटी से भी मिट सकता है, किसीका नामों निशान ।।
अरे कोई कारण होगा ।।

धन से बिस्तर मिल जाए, पर नींद को तरसे नैन ।
कॉटों पर भी सोकर आए, किसीके मन को चैन ।।
अरे कोई कारण होगा ।।

तेरे नाम का सुमिरन...

तेरे नाम का सुमिरन करके, मेरे मन में सुख भर आया ।
तेरी कृपा को मैने पाया, तेरी दया को मैने पाया ।।
दुनिया की ठोकर खाकर, जब हुआ कभी बेसहारा ।
ना पाकर अपना कोई, जब मैने तुम्हें पुकारा ।
हे नाथ ! मेरे सर ऊपर, तूने अमृत बरसाया ।।

तू संग में था नित मेरे, ये नैना देख न पाए ।
चंचल माया के रंग में, ये नैन रहे उलझाए ।
जितनी भी बार गिरा हूँ, तू ने पग–पग मुझे उठाया ।।

भवसागर की लहरों में, भटकी जब मेरी नैया ।
तट छूना भी मुश्किल था नहीं दिखे कोई खिवैया ।
तू लहर बना सागर की, मेरी नाव किनारा लाया ।।

हर तरफ तुम्हीं हो मेरे, हर तरफ तेरा उजियारा ।
निर्लेप प्रभुजी मेरे, हर रूप तुम्हीं ने धारा ।
तेरी शरण में आके दाता, तेरा तुम्हीं को चढ़ाया ।।

दया वही है करता..

दया वही है करता, सबका है रखवाला ।
कितने गुणों से भरा प्रभुजी, कितना है वो प्यारा ।।

कस्तूरी समान बिराजे, अज्ञानी खोजे वन में ।
इधर–उधर क्यों भटके नादॉ, वो तो है तन–मन में ।।
उस जैसा न कोई जग में, वो तो है सबसे न्यारा ।।

सबके भीतर है वो, वही रचता है सृष्टि को ।
पुतले में वो नैन बनाकर, भर देता है दृष्टि को ।।
वही तो सृष्टिकर्ता, जो है सबका यारा ।।

धर्म की रक्षा करता, पापी की नाव डुबाता ।
सज्जनों को वो हॅसाता और दुष्टों को है रूलाता ।।
पापों से बचाता है ''वसु'', वो तो पिता हमारा ।।

प्रभु इतना तो बतला...

प्रभु इतना तो बतला, तेरा कहॉ ठिकाना है ।
किस राह पे चलना है, तेरे दर पे जाना है ।।

पाताल में जल–थल मे, पवन में गगन में ।
हृदय में रहता है या रहता तन–मन में ।
दर्दे दिल कहता है, अब तुझको पाना है ।।

तुम ध्यान लगाने से, सुनते हैं कि मिलते हो ।
हृदय में ज्योति बन, सुनते हैं कि दिखते हो ।
प्रभु अब तो दया कर दो, तुम्हें अपना बनाना है ।।

थक चुका है तन मेरा, टूट चुका है मन मेरा ।
अब तो सुन ''वसु'' का, तू ही है प्राण मेरा ।
मुरझाए हुए दिल में, इक आश जगाना है ।।

तू है सच्चा पिता..

तू है सच्चा पिता, सारे संसार का, ओं प्यारा ।
तू ही तू ही है रक्षक हमारा ।।
चॉद सूरज सितारे बनाए, पृथ्वी आकाश पर्वत सजाए ।
अन्त आया नहीं, तेरा पाया नहीं पारा वारा ।। तू ही....
पक्षी गण राग सुदर है गाते, जीव जन्तु भी सिर है झुकाते ।
उस को ही सुख मिला, तेरी राह पर चला, जो भी प्यारा ।। तू ही...
पाप पाखण्ड हमसे छुड़ाओ, वेद मार्ग पर हमको चलाओ ।
लगे भक्ति में मन, करें संध्या हवन, जगत् सारा ।। तू ही...
अपनी भक्ति में मन को लगाओ, कष्ट सारे हमारे मिटाओ ।
दुखियों कंगालों का, और धन वालों का, तू सहारा ।। तू ही...

इन्सान कहते हैं..

किसी के काम जो आए, उसे इन्सान कहते हैं ।
पराया दर्द अपनाए, उसे इन्सान कहते हैं ।।

कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है ।
कभी सुख है कभी दुःख है, इसीका नाम जीवन है ।।
जो दुःख में भी न घबड़ाए, उसे इन्सान कहते हैं ।।

यह दुनिया एक उलझन है, कभी धोखा कभी ठोकर ।
कोई हॅस–हॅस के जीता है, कोई जीता है रो रो कर ।।
जो गिरकर के संभल जाए, उसे इन्सान कहते हैं ।।

अगर गलती रूलाती है, तो राह भी दिखाती है ।
बशर गलती का पुतला है, वो अक्सर हो ही जाती है ।।
जो गलती करके पछताए, उसे इन्सान कहते हैं ।।

अकेले ही जो खा–खाकर, सदा गुजरान करते हैं ।
यूं भरने को तो दुनियां में, पशु भी पेट भरते है ।।
पथिक जो बॉटकर खाए, उसे इन्सान कहते हैं ।।

ओ३म् प्राणाधार है..

ओ३म् है जीवन हमारा, ओ३म् प्राणाधार है ।
ओ३म् है कर्ता विधाता, ओं पालनहार है ।।
ओं है दुःख का विनाशक, ओं सर्वानन्द है ।
ओं है बल तेजधारी, ओं करूणाकन्द है ।।
ओं सबका पूज्य है हम ओं का पूजन करें ।
ओं ही के ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें ।।
ओं के गुरूमंत्र जपने से रहेगा शुद्ध मन ।
बुद्धि नित प्रतिदिन बढेगी, धर्म में होगी लगन ।।
ओं के जप से हमारा, ज्ञान बढ़ता जाएगा ।
अन्त में प्रिय ओं हमको, मोक्ष पद पहुँचाएगा ।।

करो चिन्तन...

कब दूर प्रभु है हमसे, करो चिन्तन निर्मल मन से ।
सुख मिलेगा भक्ति भजन से, करने को अपने तन से ,
ये जीवन तो एक दिन जाना है, लौटकर नहीं आना है ।।

ये बचपन खेल खिलौना, कुछ दिन का सपना सिलौना ।
जब जाए जवानी तेरी, फिर बाद पड़ेगा रोना ।।
जब आए तुझे बुढ़ापा, अब तो बीमार बनाया ।
ऐसे मिट जाए जग से, जैसे पानी बीच बतासा ।।

ऋषियों मुनियों का कहना, दुष्कर्मों से बचते रहना ।
जीवन में यदि दुःख आए, तुम हँस–हँसके सह लेना ।।
गर तेरी सच्ची भक्ति, मिले दुःख सहने की शक्ति ।
चलता तू संभल–संभल के, तुझे मिल जाएगी मुक्ति ।।

दुनियां एक पहेली, नहीं समझ किसीको आए ।
कहीं सजे सुनहरी रातें, कोई दीपक रहा बुझाए ।।
क्या खोया और क्या पाया, सब ये भी हिसाब लगाया ।
क्या कभी प्रेम से आकर, ईश्वर को शीश झुकाया ।।

दो दिन का मेला..

दो दिन का मेला है, एक दिन तू जाएगा ।
प्रभु का तू भजन करले, नहीं तो पछताएगा ।।

जो पाया यहाँ आकर, यहीं छोड़ तू जाएगा ।
आया जो लिखा करके, उस फल को ही पाएगा ।
शुभ कर्मों की खेती कर, अच्छा फल पाएगा ।।

ये जग तो सराय है, कोई आए कोई जाए ।
दरबार वही है मगर, दरवान बदल जाए ।
खुशबू रह जाएगी, तू ना रह पाएगा ।।

देह का तो भरोसा क्या, चिता में जल जाना है ।
पिंजड़े के पंछी को, आखिर उड़ जाना है ।
प्रभु से 'वसु' प्रीत लगा, सच्चा सुख पाएगा ।।

धन्य हो जाए..

प्रभु की कृपा जिस पर हो जाए । धन्य हो जाए, धन्य हो जाए ।।

चाहे अमीर हो, चाहे गरीव हो । फकीरों जैसे क्यों न नसीब हो ।
दाता दयालु, सबको निभाए ।।

जीवन का होना, मरना बिछड़ना । सृष्टि का बनना और बिगड़ना ।
उसके ही हाथों में होते पाए ।।

प्रभु की भक्ति जो भी कर पाया । भक्त पर छाई, प्रभु की छाया ।
श्रद्धा से भक्ति में, मन को लगाए ।।

सुख में रहो 'वसु' या रहो दुःख में । सदा रहे ओं नाम मुख में ।
प्रभु कृपालु, कष्ट मिटाए ।।

हम सब मिलके..

हम सब मिलके दाता आये तेरे दरबार ।
भर दे झोली सबकी तेरे पूरण भण्डार ।।
होवें जब संध्याकाल, निर्मल होके तत्काल ।
अपना मस्तक झुकाके, करके तेरा ख्याल ।
तेरे दरपे आके बैठे सारा परिवार ।।
लेके दिल में फरियाद, करते हम तुमको याद ।
जब हो मुश्किल की घड़ियां मांगे तुमसे इमदाद ।
सबसे बढ़के उँचा जग में तेरा आधार ।।
चाहे दिन हो बिपरीत, होवें तुमसे ही प्रीत ।
सच्ची श्रद्धा से गावें तेरी भक्ति के गीत ।
होवे सबका प्रभुजी तेरे, चरणों में प्यार ।।
तू है सब जग का वाली, करता सबकी रखवाली ।
हम हैं रंग–रंग के पौधे, तुम हो हम सबके माली ।
पथिक बगीचा है यह तेरा, सुंदर संसार ।।

मेरे देवता देना सहारा...

मेरे देवता मुझको देना सहारा ।
कहीं छूट जाए न दामन तुम्हारा ।।
तेरे रास्ते से हटाती है दुनियां,
इशारों से मुझको बुलाती है दुनियां ।
सुनना न किसी का झूठा इशारा ।।
सिवा तेरे मन में समाए न कोई,
लगन का यह दीपक बुझाए न कोई ।
तू ही मेरी नदिया तू ही है किनारा ।।
तेरे नाम का गीत गाता रहा हूँ मैं,
सुबह–शाम तुमको ध्याता रहूँ मैं ।
तेरा नाम मुझको सबसे प्यारा ।।

कैसे तुम्हें मनाऊँ

तुम्हीं बताओ भगवन्! कैसे तुम्हें मनाऊँ ।
हैरान हूँ मैं आखिर, कैसे तुम्हें रिझाऊँ ।

जो कुछ है पास मेरे तुमने ही तो दिया है ।
जिसे कह सकूँ मैं अपना, मेरे पास ऐसा क्या है ।
क्या भेंट फिर तुम्हारे, चरणों पे मैं चढ़ाऊँ ।।

सूरज को दीप दाता कैसे भला दिखाऊँ ।
तुम ज्ञान के हो दाता, तुम्हें क्या भजन सुनाऊँ ।।
क्या तुमको मैं बताऊँ, क्या तुमसे मैं छुपाऊँ ।।

हर बस्तु में समाए हुए हो मेरे भगवन् ।
श्रद्धा सुमन है मेरे, जिसे कर सकूं मैं अर्पण ।।
दुबिधा में फंस गया हूँ क्या लाऊँ क्या न लाऊँ ।।

तू कर प्रभु से प्रीत...

तू कर प्रभु से प्रीत यूं ही दिन बीतते जाते हैं ।
तू हार के बाजी जीत, यूं ही दिन बीतते जाते हैं ।।

शुरू से है यह ताना–बाना, आने के संग जाना ।
कुंए से भर–भर लोटे आए खाली हुए रवाना ।।
है यही जगत् की रीत, यूं ही दिन बीतते जाते हैं ।।

दुःख की धूप कभी है सिर पर, कभी है सुख की छाया ।
बदल–बदल कर समय सभी पर, बारी बारी आया ।।
बर्षा, गर्मी कभी शीत, यूं ही दिन बीतते जाते है ।।

सैकड़ों संगी साथी इस जॉ, बने हैं तेरे सहारे ।
तू है इनका बहुत ही प्यारा, ये है तेरे प्यारे ।।
पर वहॉ नहीं कोई मीत, यूं ही दिन बीतते जाते है ।।

सत्संग में आकर...

मैं सत्संग में प्रभु आकर हैरान हो गया ।
तेरी दया का धन मैं पाकर, धनवान हो गया ।।

लगता जैसे तुझसे मेरा, रिश्ता बड़ा पुराना ।
भूल न जाना मुझे प्रभु, चरणों में देना ठिकाना ।।
पूरा मेरे दिल का, अरमान हो गया ।।

जनम–जनम के शुभ कर्मों का, फल ये आज मिला है ।
दीनानाथ जीवन ये मेरा, बनके चमन खिला है ।।
इस खलकामी जीवन का, कल्याण हो गया ।।

अंबर धरती चॉद सितारे, जिसकी महिमा गावे ।
चारों दिशाएं करें आरती, देव भी उसको ध्यावें ।।
भक्तों पर भगवान मेहरबान हो गया ।।

पतित पावन नाम तिहारो...

पतित पावन नाम तिहारो, मुझको पावन कर दो ।
पतझड़ जैसा जीवन मेरा, उसको सावन कर दो ।।

चरण पड़ा हूँ विनती सुन लो, पाप ताप को हरना ।
श्रद्धा तुम पर मेरी प्रभुजी, मान हमारा रखना ।।
कलुषित तन–मन निर्मल होवें, ऐसा मुझको वर दो ।।

पतित हुए है करम हमारे, अपना मुझे बना लो ।
करें याचना दास हे भगवन् ! मुझको तुम अपना लो ।।
हे प्रभुवर तुम बनो सहायक, मन में आनंद भर दो ।।

इतना बता तो दो..

प्रभु बैठे तुम कहॉ हो, इतना बता तो दो ।
तुम क्यों नजर न आते, प्रभुवर बता तो दो ।।

मन तो तुम्हारे नाम को, जपता है रात–दिन ।
तन भी लगे हैं तेरी सेवा में रात–दिन ।।
तुझको लगे है देर क्या, बिगड़ी बना तो दो ।।

दुनियां की ठोकरों से, गिरता चला हूँ मैं ।
दुनियां के उलझनों में फॅसता चला हूँ मैं ।।
मुझे अपनी शरण में लीजिए, इतनी कृपा तो दो ।।

तूने दिया जो सब कुछ, ''वसु''ऋण चुकाएं कैसे ।
हृदय की कोठरी में हो, तुमको भुलाएं कैसे ।।
सासों में राग बनकर, सरगम बना तो दो ।।

ओ३म् नाम रस बरसे..

ओ३म् नाम रस बरसे रे मनवा, ओं नाम रस बरसे ।।

दीया की अग्नि सूरज को ध्यावें, मिट्टी कण पृथ्वी को ।
जल की धारा छटपटाती, मिलना है जो दिधि को ।।
प्रभु मिलन के अमृत पल को, मनवा मोरा तरसे ।।

नाम की रस धारा में डूबकर, मन का मैल धूल जावे ।
निर्मल मन–दर्पण में प्रभु दरश का आनंद पावें ।
प्रभु प्रेम–रस में भीगकर, मनवा ''वसु'' का हरषे ।।

दो घड़ी भगवान का ले...

दो घड़ी भगवान का ले नाम तू ।
छोड़कर दुनियां के सारे काम तू ।।

दो घड़ी का ध्यान भी रंग लाएगा ।
दे समय थोड़ा सुबह और शाम तू ।।

अपने दिल को साफ कर आसन जमा ।
मन की चंचलता को प्यारे थाम तू ।।

देख तेरे काम की ये बात है ।
पाएगा दुनियां में फिर आराम तू ।।

सच्चिदानंद प्रभु...

ओं सच्चिदानंदस्वरूप प्रभु, अजर अमर और वो है स्वयंभू ।
ओं बोलो ओं, बोलो ओं जय–जय ओ३म् ।।

ब्रह्माण्डों का स्वामी बृहस्पति, जड़–जीवों का स्वामी गणपति ।
ओं बोलो ओं, बोलो ओं जय–जय ओ३म् ।।

अनन्त पराक्रम युक्त उरूक्रम, कर्मों का फल प्रदाता यम ।
ओं बोलो ओं, बोलो ओं जय–जय ओ३म् ।।

राहु बनके दुष्टों को जो छोड़ता, केतु बनके रोगों को छुड़ाता ।
ओं बोलो ओं, बोलो ओं जय–जय ओ३म् ।।

ब्रह्मा, विष्णु है वो महेश्वर, विविध गुणों का धनी विश्वेश्वर ।
ओं बोलो ओं, बोलो ओं जय–जय ओ३म् ।।

गुण अनेक ''वसु'' नाम अनेक है, अन्तर्यामी ईश्वर एक है ।
ओं बोलो ओं, बोलो ओं जय–जय ओ३म् ।।

बुराइयों को अपनाना नहीं चाहिए..

बुराइयों को कभी जीवन में अपनाना नहीं चाहिए ।
ये मीठा जहर होता है इसे खाना नहीं चाहिए ।।

कोई कितना भी क्यों न हो, बड़े घर–बार धनवाला ।
जहां स्वागत नहीं होता, वहां जाना नहीं चाहिए ।।

लगे पेड़ों पे फल ज्यों ही, झुंकी सब डालियां उनकी ।
वहां ऐश्वर्य को पाकर के, इतराना नहीं चाहिए ।।

अगर कुछ दे नहीं सकते, तो कह दो माफ कर बाबा ।
मगर दुत्कार कर याचक को लौटाना नहीं चाहिए ।।

पड़ा भट्टी में जब सोना, पथिक वह बन गया कुन्दन ।
प्रभु जब कष्ट देता है तो घबराना नहीं चाहिए ।।

तारीफ प्रभु की...

तारीफ उस प्रभु की जिसने जगत् रचाया ।
कैसी धरा बनाई, क्या आसमां बनाया ।।

देखो ये तन के पूर्जे, खेलें ये खेल कैसे ।
जड़ता में देखो कैसे, प्राणों को है बसाया ।।

सूरज में चमक दी है, चंदा में चांदनी भी ।
धरती को बिन सहारे क्या खूब घूमाया ।।

कोई भी एक प्राणी, भूखें कभी न सोता ।
भण्डारा कैसा देखो, तूने यहां चलाया ।।

पर्वत की पंक्ति देखो, सागर की लहरें देखो ।
चकरा गई ये बुद्धि, ऐसा जहां रचाया ।।

आनन्द स्रोत...

आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है ।
अचरज है जल में रहके भी मछली को प्यास है।।

फूलों में ज्यों सुभाष ईख में मिठास है ।
भगवान का त्यों विश्व के कण कण में वास है ।।

टुक ज्ञान चक्षु खोल के तू देख तो सही ।
जिसको तू ढूँढता है वो तो तेरे ही पास है।।

कुछ तो समय निकाल आत्म शुद्धि के लिए ।
नर जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है ।।

आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक ।
तू जब तलक प्रकाश इन्द्रियों का दास है ।।

भजन करले....

इक बार भजन कर ले, मुक्ति का यतन कर ले ।
छूट जाएंगे जन्म मरण, प्रभु का सुमिरन कर ले ।।

यह मानुष का चोला, हर बार नहीं मिलता ।
जो गिर गया डाली से वह फूल नहीं खिलता ।।
मौका है ये जीवन का, गुलजार चमन कर ले ।।

नर इन कानों से तू, सुन ऋषियों की वाणी ।
मन को ठहरा करके, बन जा आत्म ज्ञानी ।।
जिह्वा तो चले मुख में, अब ओं रटन कर ले ।।

मस्तानों की टोली में, ले नाम लिखा अपना ।
तब आएगी साफ नजर, है दुनियां एक सपना ।।
धुल जाएगी सब स्याही, उजला तन–मन कर ले ।।

प्रभु की भक्ति में..

प्रभु की भक्ति में, मन को क्यों न लगाता । भक्ति...
भक्ति से प्रभु मिलते क्यों मन को न समझाता ।।

प्रभु की भक्ति में, छाती है अजब मस्ती ।
तन–मन में भरती है, एक अद्‌भुत सी शक्ति ।।
भक्ति के आगे ही, संसार है झुक जाता ।।

बेदर्द जमाने ने, कितने है जुल्म किए ।
प्रभु भक्त दयानंद ने, वे सारे कष्ट सहे ।।
ये दुनियां गाती है, प्रभु भक्तों की यशगॉथा ।।

भक्ति–रस में डूबकर, बन निर्भय मतवाला ।
भक्ति के दीप जला, कर हृदय को उजाला ।।
भक्ति की महिमा को, वेद पुराण है गाता ।।

बन्धनों में पड़कर क्यों करता आना–जाना ।
भक्ति कर ले ''वसु'' तू यदि मोक्ष को है पाना ।।
प्रभु नाम के सुमिरन से हर प्राणी है तर जाता ।।

मिल गया मन का मीत...

मुझे मिल गया मन का मीत, ये दुनिया क्या जाने ।
मेरी लागी प्रभु संग प्रीत, ये दुनिया क्या जाने ।।

बाजी जब प्रभुवर पे लगाई, पलट गया पाशा मेरे भाई ।
मेरी हार हो गई जीत, ये दुनिया क्या जाने ।।

ताल अलग है राग अलग है, ये बैराग–अनुराग अलग है ।
मन गाए किसके गीत, ये दुनियां क्या जाने ।।

सत्संगी होकर जो सीखा, काम क्रोध खोकर जो सीखा ।
कैसा है ये संगीत, ये दुनियां क्या जाने ।।

प्रभु भक्ति बिना..

पार न लगोगे प्रभु भक्ति बिना, प्रभु न मिलेंगे आत्म–शक्ति बिना ।
प्रेम न मिले जैसे श्रद्धा बिना, श्रद्धा न मिले सत् पात्र बिना ।।

प्रातः शाम जिसने प्रभु नाम लिया, सच कहे जिन्दगी उसीने जिया ।
फले–फूले देखो उसीका जीवन, जिसने भी प्रभु–नाम रस पिया ।।
प्राणी जैसे देखो प्राण के बिना, वैसे ही भक्त भगवान के बिना ।।

कर्म से बनता भाग्य मानो, भाग्य से बड़ा कर्म–ये भी जानो ।
रिश्ते–नाते छोड़ जाते है, साथ निभाता है धर्म मानो ।।
फल न मिलेगा पौधा रोपे बिना, सुख न मिलेगा धर्म रोपे बिना ।।

तीरथ घूमो ''वसु'' हजारों हजार, प्रसाद चढ़ाओ जाके मंदिर द्वार ।
तब भी न होगा तेरा बेड़ा पार, चाहे चढ़ाओ भगवान को हार ।।
भक्ति न मिले प्रभु कृपा बिना, कृपा न मिले पुरूषार्थ बिना ।।

जीवन का सफर..

जीवन का ये सफर है, चलना तो पड़ेगा ।
जन्मे हैं गर यहां हम, मरना तो पड़ेगा ।।

हमने जनम्–जनम् के, कर्मों को साथ लाया ।
वो सब यहां है खोया, जो कुछ था हमने पाया ।।
किया हुआ धरम ही, संग अपने रहेगा ।।

धाराएं छटपटाती, सागर से जो है मिलना ।
आत्मा भी है तड़पती, प्रभुवर से जो मिलना ।।
कीचड़ से उठ कमल को, खिलना तो पड़ेगा ।।

रूक जाए नदी की धारा, काइयां तो जमेगा ।
दुरितों से लिप्त जीवन, मंझधार में थमेगा ।।
जीवन सफल हो जाए, गर नियमित ''वसु'' चलेगा ।।

सारे जहॉ के मालिक...

सारे जहॉ के मालिक, तेरा ही आसरा है ।
राजी है हम उसीमें, जिसमें तेरी रजा है ।।

हम क्या बताएं तुझको, सब कुछ तुम्हें खबर है ।
हर हाल में हमारी तेरी तरफ नजर है ।।
किस्मत है वो हमारी जो तेरा फैसला है ।।

हाथों को हम दुआ की, खातिर में लाएं कैसे ।
सजदे में तेरे आकर, सिर को झुकाएं कैसे ।।
मजबूरियां हमारी सब तू ही जानता है ।।

रोकर कटे या हॅसकर कटती है जिन्दगानी ।
तू गम दे या खुशी दे, सब तेरी मेहरबानी ।।
तेरी खुशी समझकर, सब हम भुला दिया है ।।

दुनियां बनाके मालिक, जाने कहां छिपा है ।
आता नहीं नजर तू, बस् एक यही गिला है ।।
भेजा है इस जहां में जो तेरा शुक्रिया है ।।

प्रभु पर हो विश्वास...

प्रभु में श्रद्धा, प्रभु की भक्ति, प्रभु पर हो विश्वास ।
प्रभु का बन्दे सुमिरन करले, प्रभु है तेरे पास ।।

जिसने दिया है सब कुछ तुझको, उसका गुण तू गा ले ।
नेकी के राह पर चलकर, प्यार प्रभु का तू पा ले ।।
उसकी गोदी में बैठकर ही, मैल का होवे नाश ।।

चलने की आए बारी जब, कोई साथ न होता ।
जानकर के तू नादॉ रे ''वसु'' वक्त क्यों बृथा खोता ।।
ध्यान लगाले उसका रे बन्दे, हृदय में जिसका बास ।।

ओ३म् है परम पिता का नाम..

ओं है परम पिता नाम, भज लो प्यारे ओं का नाम ।
चाहे सुबह हो चाहे शाम, भज लो प्यारे ओं का नाम ।।

ओं है वेदों का वरदान, ओं का नाद है ब्रह्म समान ।
ओं है जीवन ओं है प्राण, ओं में रहते हैं भगवान ।।
ओं सुमिरो आठों याम, भज लो प्यारे ओं का नाम ।।

ओं की ध्वनि है अति पावन, ओं का मंत्र है मन–भावन ।
ओं का अक्षर है अनुपम, ये सृष्टि का शब्द प्रथम ।।
इसमें निछावर शब्द तमाम्, भज लो प्यारे ओं का नाम ।।

ओं कहो ओंकार कहो, शब्द ये बारंबार कहो ।
ओं की महिमा अपरंपार, ओं करेगा बेड़ा पार ।।
जीतोगे जीवन संग्राम, भज लो प्यारे ओं का नाम ।।

कर ले भजन...

सुन ले रे मन, कर ले भजन, तेरा बातों में जाए जीवन ।

करके जतन तूने दौलत कमाई,
प्रभु के सुमिरन की फुरसत न पाई ।
तूने पापों में खोया नर तन ।।
सुन ले रे मन, कर ले भजन, तेरा बातों में जाए जीवन ।

इस जिन्दगी का बन्दे, क्या है ठिकाना ।
कब होगा जाना ये तो किसी ने न जाना ।
क्यों न माया का तोड़े बन्धन ।।
सुन ले रे मन, कर ले भजन, तेरा बातों में जाए जीवन ।

अब भी भला जो चाहे कहता है ये मन,
प्रभु जी के भजनों में लगा अपना मन ।
कर दे खुद को प्रभु में अर्पण ।।
सुन ले रे मन, कर ले भजन, तेरा बातों में जाए जीवन ।

माता–पिता पर भजन...

मुझे इस दुनियां में लाया, मुझे बोलना चलना सिखाया ।
वो मात–पिता तुम्हें वन्दन, मैने किस्मत से तुम्हें पाया ।।

मैं जब से जग में आया, बन तब से शीतल छाया ।
कभी सहलाया गोदी में, कभी कंधों पे बिठाया ।।
मेरे सिर पर हाथ रखकर, बस प्यार ही प्यार लूटाया ।।

मैं उठाकर सर चल पाऊँ, इस लायक तुमने किया है ।
कहीं हाथ नहीं फैलाऊँ, मुझे तुमने इतना दिया है ।।
मुझे जग की रीत सिखाई, मुझे धर्म का पाठ पढ़ाया ।।

मॉ बाप की ऑखों से मैं, ऑसू बनकर न गिरूंगा ।
मॉ बाप का दिल जो दुखा दे, मैं ऐसा कुछ न करूंगा ।।
मॉ बाप के रूप में मैने, भगवान को जैसे पाया ।।

आया शरण..

आया शरण ठोकरें जग की खाके ।
हटूंगा प्रभु तेरी, दया दृष्टि पाके ।।

पहले मगन हो, सुखी नींद सोया ।
सब कुछ पाने का सपना संजोया ।।
मिला तो वही जो लाया लिखाके ।।

मान ये काया का है बस् छलावा ।
रावण सा ज्ञानी भी बंचने न पाया ।।
रखूंगा कहां तक मैं खुद को बंचाके ।।

कर्मों की लीला बड़ी है निराली ।
हरिशचन्द्र मरघट की करें रखवाली ।।
समझा में आया सब कुछ लूटाके ।।

नमस्कार ...

नमस्कार भगवान तुम्हें भक्तों का बारंबार हो ।
श्रद्धा रूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो ।।

तुम कण कण में बसे हुए हो तुझ में जगत समाया है ।
तिनका हो चाहे पर्वत हो सभी तुम्हारी माया है ।।
तुम दुनियां में हर प्राणी के जीवन का आधार हो ।।

सब के सच्चे पिता तुम्हीं जगत् की माता हो ।
भाई बन्धु सखा सहायक रक्षक पोषक दाता हो ।।
चींटी से लेकर हाथी तक, सबके सृजनहार हो ।।

ऋषि मुनि योगी सारे तुझसे ही वर पाते है ।
क्या राजा क्या रंक तुम्हारे दर पे शीश झुकाते हैं ।।
परम दयालु परम कृपालु करूणा के भण्डार हो ।।

तूफानों से घिरे पथिक प्रभु तुम ही एक सहारा हो ।
डगमग डगमग नैया डोले तुम्हीं नाथ किनारा हो ।।
तुम खेवट हो इस नैया के और तुम्हीं ही पतवार हो ।।

जय सत! चित् आनन्द..

जय सत् चित आनंद अजर अविनाशी ।
जय पालक परमेश्वर जय घट–घट वासी ।।

सुखों के दाता, भाग्य विधाता । सुखों के हम अभिलाषी ।।

विश्व तुम्हारा, गुण है गाता । सब तेरे अन्त्येवासी ।।

वरदा वर दो, वलदा वल दो । दर्शन की है प्यासी ।।

हे ज्ञानवान भगवन्...

हे ज्ञानवान भगवन् हमको भी ज्ञान दे दो ।
करूणा के चार छींटे करूणा निधान दे दो ।।

सुलझा सकें हम अपने जीवन के उलझनों को ।
प्रज्ञा ऋतंभरा सी बुद्धि का दान दे दो ।।

अपनी मदद हमेशा खुद आप कर सके हम ।
इन बाजूओं में शक्ति, हे शक्तिमान दे दो ।।

दाता तुम्हारे दर पे किस चीज की कमी है ।
चाहो तो निर्धनों को दौलत की खान दे दो ।।

डर है पथिक तुम्हारा रास्ता न भूल जाएं ।
भक्तों की मंडली में हमको भी स्थान दे दो ।।

एकवार बोलो रे..

एकवार बोलो रे प्यारा सा ओ३म् नाम बोलो रे ।। 2।।

पृथिवी पहाड़ नदी नाले, सब है प्रभु का दान ।
मिट्टी का पुतला बनाकर, भर दिया उसमें प्राण ।।
सब है प्रभु की माया, उसको तुम न भुलो रे ।।

पल में निर्धन बनाता, पल में धनी बनाता ।
छोटा या बड़ा हिसाब, सही सही भुगताता ।।
ओ३म् नाम जपके तुम, मन के पाप धो लो रे ।।

सूरज चॉद तारे देखो, महिमा प्रभु की गायें ।
ऋषि मुनि योगी जन, उसी के ही गुण गायें ।।
कृपा पाओगे 'वसु', मन के पट खोलो रे ।।

इतनी शक्ति...

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना ।
हम चले नेक रास्ते पे हम से,भूलकर भी कोई भूल हो ना ।।

दूर अज्ञान के हो अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे ।
हर बुराई से बंचते रहे हम, जितनी भी दे भली जिन्दगी दे ।।
बैर हो न किसीको किसी से,
भावना मन में बदले की हो ना ।।

हम न सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचें किया क्या है अर्पण ।
फूल खुशियों के बांटे सभीको सबका जीवन बन जाए मधुवन ।।
अपनी करूणा का जल तू बहाके,
कर दे पावन हर एक मन का कोना ।।

अब सौंप दिया इस जीवन का..

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ।।

मेरा निश्चय है एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं ।
अर्पण कर दूँ जगती भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ।।

या तो मैं जग से दूर रहूँ, और जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ ।
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में ।।

यदि मानुष ही मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी रहूँ ।
मुझ पूजक की इक इक रग का हो तार तुम्हारे हाथों में ।।

जब जब संसार का बन्दी बन, दरबार तुम्हारे आऊँ मैं ।
तब–तब हों पापों का निर्णय सरकार तुम्हारे हाथों में ।।

मुझमें तुझमें है भेद यही, मैं नर हूँ तू नारायण है ।
मैं हूँ संसार के हाथों में संसार तुम्हारे हाथों में ।।

साथ ले लो पिता,

साथ ले लो पिता, आगे बढ़ जाऊंगा ।
वरना सम्भव है मैं भी फिसल जाऊंगा ।।

राहें चिकनी खड़ी और पथरीली है ।
कॉटो झाड़ी भरी और जहरीली है ।
दो सहारा नहीं तो मैं फंस जाऊंगा ।।

भोग विषयों की उठती है इक इक लहर ।
मुझको उलझा डुबाने चली हर प्रहर ।
दे दो पतवार वरना न तर पाऊंगा ।।

दुनियां इस ओर कहती है आ मौज ले ।
पर उधर धर्म कहता है दुःख मोल ले ।
तुम कहोगे मुझे वैसा कर पाऊंगा ।।

सत्य कहता हूँ भूला जब भी मैं तुम्हें ।
पायी दुनियां मगर एक न पाया तुम्हें ।
बिन तुम्हारे मैं आखिर किधर जाऊंगा ।।

ओ३म् का सुमिरण किया करो...

ओ३म् का सुमिरण किया करो प्रभु के सहारे जिया करो ।
जो दुनियां के मालिक है, नाम उसी का लिया करो ।।

यह दुर्लभ मानव तन तूने, बड़े भाग्य से पाया,
विषयों में फँस करके बन्दे, हीरा जन्म गॅवाया ।
दुष्ट संग न किया करो सज्जनों से गुण लिया करो ।।

पता नहीं कब रूक जायेगा, चलते चलते श्वासा,
इक पल में सब खत्म हो जाये, जग का सब तमाशा ।
सुबह शाम जप किया करो याद प्रभु का किया करो ।।

हर प्राणी से प्यार करो तुम, सब में वही समाया,
मिलकर रहना सब है अपने, कोई नहीं पराया ।
द्वेष भाव न किया करो, राघव भूल न किया करो ।।

उस प्रभु की है कृपा बड़ी..

उस प्रभु की है कृपा बड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी ।
घण्टी बज जाये कब कूच की, मौत हरदम सिरहाने खड़ी ।।

किन्हीं शुभ कर्मों का ये फल, तुझे मानव का चोला मिला ।
जो आया है जायेगा वो, बन्द होगा न ये सिलसिला ।।
वेद की कहती एक–एक कड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी ।।

इस जवानी पे इतरा न तू, बातों–बातों में ढल जायेगी ।
उभरा सीना सिकुड़ जायेगा, और कमर तेरी झुक जायेगी ।।
टेक करके चलेगा छड़ी, याद करले घड़ी दो घड़ी ।।

जो करना है ले आज कर, कुछ खबर प्यारे कल की नहीं ।
मानव चोले को कर ले सफल, ढील दे इसमें पल की नहीं ।।
टूट श्वासों की जाये लड़ी, याद कर ले घड़ी दो घड़ी ।।

गाए जा गाए जा..

गाए जा गाए जा भगवान की महिमा गाए जा ।
शाम सुबह इस मन मन्दिर में झाड़ू रोज लगाए जा ।।

तरह तरह के खेल है इसमें, दुनिया एक तमाशा है ।
कहीं खुशी और कहीं गमी है आशा कहीं निराशा है ।।
चाहे ये हँसाए तुझे चाहे यह रूलाए अपना फर्ज निभाए जा ।

चिन्ता और चिता इस जग में, एक समान कहाती है ।
इक जिन्दे को इक मुर्दे को, दोनों सदा जलाती है ।।
दुःख जो दिखाये वही दुःखड़े मिटाए तू चिन्ता दूर भगाए जा ।।

कौन हमेशा रहा जगत् में, किस का यहाँ ठिकाना है ।
बाँध ले अपना बिस्तर बाबा, यह तो देश बेगाना है ।।
दुनिया सराए कोई आए कोई जाए सबको पथिक समझाए जा।।

मात–पिता गुरू प्रभु चरणों में..

मात–पिता गुरू प्रभु चरणों में प्रणवत् बारंबार ।
हम पर किया बड़ा उपकार ।।

माता ने जो कष्ट उठाया, वह ऋण कभी न जाय चुकाया,
उंगली पकड़कर चलना सिखाया, ममता की दी शीतल छाया ।
इनकी गोदी में पलकर हम, कहलाए होशियार ।।

पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा कमाकर अन्न खिलाया ।
पढ़ा लिखा गुणवान बनाया, जीवन पथ पर चलना सिखाया ।।
जोड़ जोड़ अपनी पूंजी का, बना दिया हकदार ।।

तत्व ज्ञान गुरू ने दर्शाया, अन्धकार तम दूर भगाया ।
हृदय में भक्ति दीप जलाकर, प्रभु मिलन का मार्ग बताया ।।
बिन स्वार्थ ही कृपा करते, हैं ये बड़े महान ।।

प्रभु कृपा से नर तन पाया, सन्त मिलन का साज सजाया ।
बल विद्या और बुद्धि देकर, सब जीवों में श्रेष्ठ बनाया ।।
जो कोई इनकी शरण में आवे, कर देते उद्धार ।।

आ दरश दिखा दे प्रभुदेव..

आ दरश दिखा दे प्रभुदेव, तुझे तेरे लाल बुलाते है ।
तुझे रो रो पुकारे मेरे नैन, तुझे तेरे लाल बुलाते है ।।

ऑखों के ऑसू सूख चुके हैं, अब तो दरश दिखा दे ।
कब से खड़े हैं दर पर तेरे, मन की तू प्यास बुझा दे ।
तेरी लीला निराली प्रभुदेव, तुझे तेरे लाल बुलाते है ।।

बीच भॅवर में नैया पड़ी है, आकर तू पार लगा दे ।
तेरे सिवाय मेरा कोई नहीं है, आकर गले से लगा ले ।
क्यूँ देर लगाते प्रभुदेव, तुझे तेरे लाल बुलाते है ।।

डूब रहा है सुख का ये सूरज, गम की बदरिया है छाई ।
उजड़ गई बगिया जीवन की, मन की कली मुरझाई ।
करे विनती ये बालक आज, तुझे तेरे लाल बुलाते है ।।

वैसे तो तुम हो मन में हमारे, ऑखे नहीं मानती है ।
इक पल प्रभु से ये अब बिछुड़कर, रहना नहीं चाहती है ।
बरबस बरसाए नीर, तुझे तेरे लाल बुलाते है ।।

मैली चादर ओढ़ के..

मैली चादर ओढ़ के कैसे, द्वार तुम्हारे आऊँ
हे पावन परमेश्वर मेरे, मन ही मन शरमाऊँ ।

तूने मुझको जग में भेजा, देकर निर्मल काया,
आकर के संसार में मैने, इसमें दाग लगाया ।
जनम जनम की मैली चादर, कैसे दाग छुड़ाऊँ ।।

निर्मल वाणी पाकर तूझसे, नाम तेरा न गाया ,
नैन मूँदकर हे परमेश्वर, कभी ना तुझको ध्याया ।
मन वीणा के तारे टूटी, अब क्या राग सुनाऊँ ।।

इन पैरों से चलकर तेरे, मंदिर कभी न आया ,
जहाँ जहाँ हो पूजा तेरी, कभी ना शीश झुकाया ।
हे हरिहर मैं हार के आया, अब क्या हार चढ़ाऊँ ।।

करता रहूँ गुणगान..

करता रहूँ गुणगान, मुझे दो ऐसा वरदान ।
तेरा नाम ही लेते लेते, इस तन से निकले प्राण ।।

तेरी दया से मेरे भगवन्, मैने यह नर तन पाया ।
तेरी सेवा में बाधाएं डाले जग की मोह माया ।
फिर भी अरज करता हूँ, हो सके तो देना ध्यान ।।

राधा मीरा नरसी जैसी दुःख सहने की शक्ति दो ।
विचलित ना होऊँ पथ से भगवन, मुझको ऐसी भक्ति दो ।
तेरी ही सेवा में हो, इस जीवन की हर शाम ।।

क्या मालूम कब किस घड़ी, तेरा बुलावा आ जाए ।
मेरे मन की इच्छा मेरे, मन ही मन में रह जाए ।
मेरी इच्छा पूरी करना, मेरे प्रियतम कृपा निधान ।।

सोचो जरा करो मन में विचार..

सोचो जरा करो मन में विचार, मानव जनम नहीं हरवार ।
क्यों तू आया है इस संसार में, क्या तूने पाया है इस संसार में

कर ले प्रभु की भक्ति, पा ले जनम जनम से मुक्ति,
माया के चक्कर में, तू ने सारी लगा दी शक्ति ।
भूल गया तू प्रभु को, हीरा जन्म गंवाया है, तू ने बेकार में ।
क्या तूने पाया है इस संसार में ।।

माया खूब कमाई, पर की न किसी की भलाई ,
सब यहीं रह जाये, संग तेरे न कौड़ी जाई ।
मस्त रहा व्यस्त रहा, अपने परिवार में, सुख संसार में ।
क्या तूने पाया है इस संसार में ।।

काम किसी के न आया, तू ने स्वार्थ में जीवन बिताया ,
झगड़ों के चक्कर में, अपनों का ही प्रेम गवॉया ।
अपनों से बिछुड़ गया, सारी उमर बिताई है, तू ने तकरार में ।
क्या तूने पाया है इस संसार में ।।

द्वार तेरे हैं आके बैठे हम..

द्वार तेरे हैं आके बैठे हम, करूणा के छींटें बरसा ।। 2।।

हम है अज्ञानी, मूढ़–मति अभिमानी ।
तू है करतार, सबसे बड़ा ज्ञानी ।
अज्ञान के, अज्ञान के अंधेरे में लूट रहे हम,
ज्ञान की ज्योति दिखा । हे प्रभो ज्ञान की ज्योति दिखा ।।

कोटि कोटि पापों का लिए बोझ,
मन करता अब तेरी ही खोज ।
नौका.., नौका हमारी डग मग करती,
जल्दी से पार लगा । हे प्रभो जल्दी से पार लगा ।।

रिस्ते बनाने में जीवन बिताया,
अपनों ने बदले में हमको रूलाया ।
जग की, जग की ठ्केरें खाके आया 'वसु'
गोदी में अपनी बिठा, हे प्रभो गोदी में अपनी बिठा ।।

ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् बोलिए..

ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् बोलिए,, पलकों के पट फिर खोलिए ।
ये है उपदेश चारों वेदों का, श्वासों की पूँजी यूँ न रोलिए ।।

उसके मन मन्दिर में, प्रभु हर पल रहते है ।
जो जागते सोते बस, यही प्रेम से कहते है ।।

हरि नाम का रस पीकर, हो शुरू प्रभात तेरी ।
हरि कृपा छैया में, बीते हर रात तेरी ।।

ये संस्कार हमने, गुरूदेव से पाया है ।
हरि नाम रतन सच्चा, जग झूठी माया है ।।

हम सब पर कर दो प्रभु..

हम सब पर कर दो प्रभु जी, तुम कृपा की बरसात ।
हम भक्तों को दीजिए जनम जनम का साथ ।।

देनेवाले दयानिधि तो और किसी से क्या मॉगें ।
अपने प्रभु से मॉगे तो फिर धन और दौलत क्या मॉगें ।
मेरे दिल की तमन्ना यही है, तेरी पूजा करूँ दिन रात ।।

भटक रहे हैं जनम जनम से मोक्ष मार्ग दिखला दो तुम ।
करूणा के सागर हो प्रभुजी, मन की प्यास बुझा दो तुम ।
मन ऐसा कर दो भगवन्, हर पल हो तुम्हारे साथ ।।

एक सूरज के दीपक से तुम, जग को रोशन करते हो ।
अज्ञान के अंधकार को ज्ञान की ज्योत से दूर भी करते हो ।
हम सब के मन पर भी तो, छाई अंधियारी रात ।।

बहुत प्यार करते हो..

बहुत प्यार करते हो, माया से तुम ।
मगर याद रखना, ये जीवन है कम ।।

दो दिन की जिन्दगी, दो दिन का मेला ,
आया था अकेला जायेगा अकेला ।
साथ चलेंगे तेरे..2 किये जा करम ।।

लाखों करोड़ों से दिल न भरेगा ,
दिल का खजाना तो खाली रहेगा ।
करना है जो भी कर ले, जब तक है दम ।।

जिन्हें चाहते हो वो तुम्हें आग देंगे ,
तेरे दोस्त भाई तुझे दाग देंगे ।
लकड़ी के ढेरों पे होंगे भस्म ।।

अभी भी समय है कोई काम कर ले ,
किसी की दुवाओं से दामन भर ले ।
वापस मिलेगा न फिर ये जनम ।।

आसरा इस जहॉ का मिले न मिले..

आसरा इस जहॉ का मिले न मिले,
मुझको तेरा सहारा सदा चाहिए ।
चॉद तारे फलक पर दिखे न दिखे,
मुझको तेरा सहारा सदा चाहिए ।।

यहॉ खुशियां है कम और ज्यादा है गम ।
जहां देखूं वही है गरम ही गरम ।
मेरी चाहत की दुनियां बसे न बसे,
मेरे दिल में बसेरा तेरा चाहिए ।।

कभी वैराग है, कभी अनुराग है ।
यहां बदले हैं माली, वही बाग है ।।
मेरी महफिल में सम्मा जले न जले,
मेरे दिल में उजाला तेरा चाहिए ।।

मेरी धीमी है चाल और पथ है विशाल ।
हर कदम पर मुसीबत है अब लो संभाल ।।
पॉव मेरे थके ये चले न चले,
मेरे दिल में बसेरा तेरा चाहिए ।।

मुख से ओ३म् ओ३म् ..

मुख से ओ3म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् गाये जा ।
तू तो डुबा हुआ तर जायेगा ।।

पशु मरकर भी सौ काम आये,
तेरा तन भी भस्म हो जाये ।
तेरा नामो निशान..2 मिट जायेगा ।।

तेरी नैया भंवर में डोले,
फिर भी मुख से तू ओ३म् ना बोले ।
तेरा जीवन...2 व्यर्थ चला जायेगा ।।

ओ३म् नाम का भर ले खजाना,
जीवन अपना तू सफल बताना ।
संग ओ३म् का...2 नाम ही जायेगा ।।

बन्दे ना कर किसी की बुराई,
कोई देगा ना झूठी गवाही ।
प्रभु पूछे तो...2 क्या बतलायेगा ।।

तेरे दर को छोड़कर..

तेरे दर को छोड़कर किस दर जाऊँ मैं ।
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊँ मैं ।।

जब से याद भुलाई तेरी, लाखों कष्ट उठाये हैं ।
क्या जानूँ इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमाये हैं ।
हूँ शर्मिन्दा आपसे क्या बतलाऊँ मैं ।।

मेरे पाप कर्म ही तुमसे प्रीत न करने देते हैं ।
कभी जो चाहूँ मिलूँ आपसे, रोक मुझे ये लेते हैं ।
कैसे स्वामी आपका दर्शन पाऊँ मैं ।।

तू है नाथ वरों का दाता, तुझसे सब वर पाते हैं ।
ऋषि, मुनि और योगी सारे, तेरे ही गुण गाते हैं ।
छींटा दे दो ज्ञान का, होश में आऊँ मैं ।।

जो बीती सो बीती लेकिन, बाकी उम्र संभालूँ मैं ।
चरणों में ही बैठ आपके गीत प्रेम के गा लूँ मैं ।
जीवन अपने आप का सफल बनाऊँ मैं ।।

मिलता है सच्चा सुख..

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में ।
है विनती यह, छिन–छिन पल पल रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।

चाहे वैरी सब संसार बने, मेरा जीवन मुझ पर भार बने ।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो ।
पर चित्त न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।

चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, चाहे कॉटों पर भी चलना हो ।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।

मेरी जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे ।
यही कामना आठो याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।

मुझमें ओ३म् तुझमें ओ३म्

मुझमें ओ३म् तुझमें ओ३म् सबमें ओ३म् समाया ।
सबसे कर लो प्यार जगत् में कोई नहीं पराया ।।

जितने हैं संसार के प्राणी सबमें एक ही ज्योति ।
एक बाग के फूल है सारे एक माला के मोती ।
एक ही कारीगर ने सबको इक माटी से बनाया ।।
सबसे करलो प्यार....

एक पिता के बच्चे हैं हम एक हमारी माता ।
दाना–पानी देनेवाला एक हमारा दाता ।
फिर ना जाने किस मूरख ने लड़ना हमें सिखाया ।।
सबसे करलो प्यार....

ऊँच–नीच और भेद भाव की दीवारों को तोड़ो ।
बदला जमाना तुम भी बदलो बुरी आदतें छोड़ो ।
जागो और जगाओ सबको समय भी ऐसा आया ।।
सबसे करलो प्यार....

ईश्वर तुम्हीं दया करो..

ईश्वर तुम्हीं दया करो, तुम बिन हमारा कौन है ।
दुर्वलता दीनता हरो, तुम बिन हमारा कौन है ।।

माता तू ही पिता तू ही, बन्धु तू ही सखा तू ही ।
तू ही हमारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है ।।

जग को रचानेवाला तू, दुखड़े मिटानेवाला तू ।
बिगड़ी बनानेवाला तू, तुम बिन हमारा कौन है ।।

तेरी दया को छोड़कर, कुछ भी नहीं हमें खबर ।
जाएँ तो जाएँ हम किधर, तुम बिन हमारा कौन है ।।

संसार में जिसका..

संसार में जिसका प्रभु से प्यार न होगा ।
उसका तो भव सागर से बेड़ा पार न होगा ।।

सुबह और शाम जो उसके खुले दर पर न आयेगा ।
न मन में प्रेम लायेगा, न मस्तक ही झुकायेगा ।
ईश्वर के वरदानों का वह हकदार न होगा ।।

प्रभु हर एक प्राणी को सदा देता ही देता है ।
वह अपने दान के बदले कुछ भी न लेता है ।
दुनिया भर में ऐसा कहीं दरवार न होगा ।।

वो दुनिया से निराला है 'पथिक' तू जान ले इतना ।
वह शक्ति सबसे ऊँची है अगर तू मान ले इतना ।
तुझको उसकी भक्ति से फिर इन्कार न होगा ।।

भगवान मेरी नैया..

भगवान मेरी नैया, उस पार लगा देना ।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना ।।

दल–बल के साथ माया, घेरे जो मुझको आकर ।
तू देखते न रहना, झट आके बचा लेना ।।

सम्भव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊँ ।
पर नाथ! कहीं तुम भी, मुझको न भुला देना ।।

तुम देव मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक ।
यह बात सच है तो फिर सच करके दिखा देना ।।

मेरे मालिक के दरबार में..

मेरे मालिक के दरबार में सब लोगों का खाता ।
जैसे कोई कर्म करता, वैसा ही फल पाता ।।

क्या साधू क्या संत गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी,
प्रभु की पुस्तक में लिखी है, सब की कर्म कहानी ।
वही सभी के जमा खरच का, सही हिसाब लगाता ।।
मेरे मालिक...

बड़े कड़े कानून प्रभु के, बड़ी कड़ी मर्यादा,
किसी को कौड़ी कम नहीं देता, किसी को दमड़ी ज्यादा ।
इसलिए तो दुनिया में ये, जगत् सेठ कहलाता ।।
मेरे मालिक.....

करते हैं फैसला सभी का, प्रभु आसन पर डट के,
इनका फैसला कभी न बदले, लाख कोई सर पटके ।।
समझदार तो चुप रहता हैं, मूरख शोर मचाता ।।
मेरे मालिक.....

क्या भरोसा है इस जिन्दगी का..

क्या भरोसा है इस जिन्दगी का ।
साथ देती नहीं है ये किसी का ।।

श्वास रूक जाएगी चलते चलते,
शम्मा बुझ जाएगी जलते जलते ।
दम निकल जाएगा आदमी का ।।

दुनिया है एक हकीकत पुरानी,
चलते रहना है उसकी रवानी ।
फर्ज पूरा करो बन्दगी का ।।

हम रहे न मोहब्बत रहेगी,
दास्तॉ अपनी दुनिया कहेगी ।
नाम रह जाएगा आदमी का ।।

परमपिता परमेश्वर तूने..

परमपिता परमेश्वर तूने किस भॉति संसार रचा ।
स्वयं विधाता निराकार तू जग कैसे साकार रचा ।।

तारों से भरा नभ का आंगन, सूरज चंदा कर रहे नमन ।
घनघोर घटा करती गर्जन, कहीं शीतल मंद सुगंध पवन ।।
ये धरती माता नील गगन, इसमें पक्षी करते भ्रमण ।
मिल रहा उसे निशदिन भोजन, हे जगदीश्वर तुझको धन–धन ।।
कौन से शक्ति किस वस्तु से सारा सर्वाधार रचा ।
स्वयं विधाता निराकार तू जग कैसे साकार रचा ।।

कहीं रेत के टीले वन–उपवन, कहीं गहरे सागर करें नमन ।
कहीं बोल रहे पक्षीगण, कहीं भवरों का प्यारा गुंजन ।।
कहीं डाली में फूल रचे हैं, फूल के नीचे खार रचा ।।

कितना सुदर क्या कहना, इक मस्तक में दो नैना ।
बिना तेल दो दीपक का, आठ प्रहर जलते रहना ।।
मुख में दांतों का गहना, रसना बोल रही बहना ।
जागत स्वपन–सुषुप्ति में, सांसों का चलते रहना ।।
गर्भ के अन्दर मानव चोला, बिना किसी औजार रचा ।।

तू अजर–अमर अविनाशी, अन्तर्यामी घट–घट वासी ।
सुखधाम सदा तू सुखराशी, नीर अहंकार नीर अभिलाषी ।।
ये जीवन बेमोल रचा है, ये जीवन बेमोल रचा,
जीवन का उत्तम सार रचा ।।

दुनियां से मै हारा..

दुनियां से मैं हारा तो आया तेरे द्वार ।
यहॉ से गर जो हारा, तो कहां जाउंगा सरकार ।।

सुख में प्रभुवर तेरी, याद न आई,
दुःख में प्रभुवर तुमसे प्रीत लगाई ।
सारा दोष है मेरा मैं करता हूं स्वीकार ।।

मेरा तो क्या है मै तो पहले से हारा,
तुमसे ही पूछेगा ये संसार सारा ।
डूब गई क्यों नैया तेरे रहते खेबनहार ।।

जिसको बताया हमने अपना फॅसाना,
सबने बताया हमको तेरा ठिकाना ।
मैने तुमको माना है मात–पिता परिवार ।।

सबकुछ लूटा बस लाज बची है,
तुमसे ही प्रभु मेरी आश बंधी है ।
सुना है तुम सुनते हो हम जैसों की पुकार ।।

सॉझ सवेरे लेकर..

सॉझ सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु ।
करते है हम शुरू रोज का काम प्रभु ।।

शुद्ध भाव से तेरा ध्यान लगाए हम ।
विद्या का वरदान तुम्हीं से पाए हम ।।
विद्या का वरदान तुम्हीं से पाए हम।।
तुम्हीं से हर सुबह तुम्हीं से शाम प्रभु ।
करते है हम शुरू रोज का काम प्रभु ।।

गुरूओं का सत्कार कभी न भूले हम ।
इतना बने महान गगन को छूं ले हम ।।
इतना बने महान गगन को छूं ले हम ।
तुम्हीं से है आगाज तुम्हीं अन्जाम प्रभु ।
करते है हम शुरू रोज का काम प्रभु ।।

तुम मेरे जीवन के धन हो...

तुम मेरे जीवन के धन हो और प्राणाधार हो ।
एक तुम दाता दयालु, सबके पालनहार हो ।।

जागते सोते कभी भी, मैं तुम्हें भुलू नहीं ।
दुर्गुणों से दूर कर दो, सद गुणों का दान दो ।।

भर रहे धन–धान्य से तुम, सबके परिवार को ।
देते तुम थकते नहीं हो, ऐसी तुम सरकार हो ।।

जप रहे तेरा नाम पंछी, गीत गाती है पवन ।
रंग रहे रंगों से जग की, अजब रचनाकार हो ।।

जिन्दगी की नाव मैने, सौंप दी प्रभु आपको ।
तुम डुबाओ या बचाओ, मेरे खेवनहार हो ।।

मुझे तूने दाता,..

मुझे तूने दाता, सब कुछ दिया है ।
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है ।।

न मिलती दी हुई अगर दाता तेरी,
तो क्या थी जमीं में औकात मेरी ।
ये बन्दा तो तेरे सहारे जिया है,
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है ।।

ये जायदाद दी है ये औलाद दी है,
मुसीबत में हर वक्त इमदाद की है ।
तेरा ही दिया मैंने खाया पिया है,
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है ।।

मेरा ही नहीं है सभी का तू दाता,
सभी को सभी कुछ देता दिलाता ।
जो खाली था दामन वह तू ने भरा है,
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है ।।

मेरा भूल जाना तेरा न भुलाना,
तेरी रहमतों का कहां है ठिकाना ।
तेरी इस मोहब्बत ने पागल किया है,
तेरा शुक्रिया है तेरा शुक्रिया है ।।

सुख भी मुझे प्यारे...

सुख भी मुझे प्यारे है, दुःख भी मुझे प्यारे है ।
छोड़ूँ मैं किसे भगवन, दोनो ही तुम्हारे है ।।

सुख दुःख ही जीवन की, गाड़ी को चलाते है,
सुख दुःख ही हम सबको, इन्सान बनाते है ।
संसार की नदियों के, दोनो किनारे है।।

दुःख चाहे न कोई भी, सब सुख को तरसते हैं,
दुःख में सब रोते हैं, सुख में सब हँसते हैं ।
सुख मिले उसके पीछे, दुःख ही तो सहारे है ।।

सुख में तेरा शुक्र करूँ, दुःख में फरियाद करूँ,
जिस हाल में रखो मुझे, मैं तुमको याद करूँ ।
मैंने तो तेरे आगे, ये हाथ पसारे है ।।

जो है तेरी रजा उसमें, देखें मैं पकड़ कैसे,
मैं कैसे कहूँ मेरे, कर्मों के है फल कैसे ।
चख कर भी ना देखूंगा, मीठे है कि खारे हैं ।।

निज गौरव को निज वैभव को..

निज गौरव को निज वैभव को, क्यों हिन्दू बहादुर भूल गए ।
उपदेश दिया जो गीता ने, क्यों सुनना–सुनाना भूल गए ।।

रावण ने सीता चुराई तो हनुमान ने लंका जलाई थी ।
अब लाखों सीते हरी गई, क्यों लंका जलाना भूल गए ।।

गीता का ज्ञान सुनाया था, अर्जुन को वीर बनाया था ।
वो बंशी बजाना याद रहा, वह रास रचाना याद रहा ।
क्यों चक्र चलाना भूल गए ।।

राणा साहब की ललकार यही, है भारत माँ की पुकार यही ।
जिस राह पे दयानन्द चला, उस राह पे चलना भूल गए ।।

सजधज कर जब..

सजधज कर जब मौत की सहजादी आयेगी ।
न सोना काम आयेगा न चॉदी आयेगी ।।

छोटा सा पर तू बड़े अरमान है तेरे,
मिट्टी का तू सोने का सम्मान है तेरे ।
मिट्टी काया मिट्टी में जिस दिन समायेगी ।।

पंछी है रे तू पिंजरे तोड़ के उड़ जा,
माया महल सारे बन्धन तोड़ के उड़ जा ।
मौत, दिल की धड़कन में जब गुनगुनायेगी ।।

धन दौलत से खाली होंगे इक दिन तेरे हाथ,
अन्त समय भगवान भजन जाएगा तेरे साथ ।
उस दिन तुमको वेद की वाणी याद आयेगी ।।

अच्छे कर्म किये है तूने पाया मानव तन,
पाप में क्यों डूबा है पापी ये चंचल मन ।
पाप की नैया ये तुमको जिस दिन डूबायेगी ।।

सृष्टि से पहले..

सृष्टि से पहले अमर ओ३म् नाम था,
आज भी है और कल भी रहेगा ।।

सूरज की किरणों में, उसी का तेज समाया है,
चंदा की चॉदनी में, उसी की शीतल छाया है ।
धरती की गोद में, उसी का दुलार था ।।

भॅवरों की तानों में, मधुर संगीत उसी का है,
फूलों के यौवन का रसीला गीत उसी का है ।
आकाश जल थल का, वही कलाकार था ।।

सुख दुख का लंबा खेल, उसी ने रचाया है,
ये तेरे कर्मों का नक्शा सामने आया है ।
तेरे पिछले कर्मों का, उसी पे हिसाब था ।।

तू मत कर गुमान कि इक दिन जान चली जाएगी ,
ये सजी सजायी काया माटी में मिल जाएगी ।
मुक्ति का एक रास्ता, प्रभु का ही नाम था ।।

प्रभु तेरी शरण तजकर..

प्रभु तेरी शरण तजकर, शरण पाने कहां जाए ।
दिये दुःख दर्द दुनिया ने, तो दीवाने कहां जाए ।।

अगर भक्तों की भक्ति का, भवन निर्माण हो जाए ।
हमारी हर तमन्ना का, सफर आसान हो जाए ।।
बहुत उलझी पड़ी उलझन को सुलझाने कहां जाए ।।

जहॉ पर फूल हॅसता है, वहीं भवरें भी आते हैं ।
जहॉ दिलवर बसे उनका, वही वो दिल लगाते हैं ।।
शमां जलती हो महफिल में तो परवाने कहॉ जाए ।।

सुना है काम आती है, तुम्हारे नाम की दौलत ।
तेरे दर पर जमाने की, भला किस काम की दौलत ।।
मिले मस्ती तेरे दर पर तो मस्ताने कहॉ जाए ।।

यही है आखिरी मंजिल, यही असली ठिकाना है ।
यही है देवघर अपना, यही मन्दिर सुहाना है ।।
पथिक तेरे उपासक है, भजन गाने कहॉ जाए ।।

मानव तू अगर चाहे..

मानव तू अगर चाहे दुनिया को हरा देना ।
बस ईश्वर के दर पर सर अपना झुका देना ।।

राजी हो प्रभु जिसमें वो काम सही होगा ।
भगवान जो चाहेगा दुनिया में वही होगा ।।
उसे अपना बना करके उलझन को मिटा देना ।।

रक्षक है अनाथों का दुःखियों का सहारा है ।
भव पार किया उसने जिसने भी पुकारा है ।।
पल भर के लिए उसको दिल से न भूला देना ।।

धरती और सागर के रत्नों को जो पाना हो ।
आकाश में उड़ना हो पाताल में जाना हो ।।
डोरी परमेश्वर को पहले पकड़ा देना ।।

चाहेंगी सदा तुझको खुशियां और आशाएं ।
चूमेंगी चरण तेरे सब और सफलताएं ।।
जीवन को पथिक प्रभु की राहों पे लगा देना ।।

तुम्हीं हो माता..

तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो ।
तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो ।।

तुम्हीं हो साथी तुम्हीं सहारे,
कोई न अपना सिवाय तुम्हारे ।
तुम्हीं हो नैया तुम्हीं खिवैया,
तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो ।।

जो खिल सके न वो फूल हम है,
तुम्हारे चरणों की धूल हम है।
दया की दृष्टि सदा ही रखना,
तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो ।।

भरोसा कर तू ईश्वर पर..

भरोसा कर तू ईश्वर पर, तुझे धोखा नहीं होगा ।
यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा ।।

कभी सुख है कभी दुःख है, यह जीवन धूप छाया है ।
हॅसी में ही बिता डालो, बिताना ही तो माया है ।।

जो सुख आवे तो हॅस देना, जो दुःख आवे तो सह लेना ।
न कहना कुछ कभी जग से, प्रभु से ही तू कह देना ।।

यह कुछ भी तो नहीं जग में, तेरे बस कर्म की माया ।
तू खूद ही धूप में बैठा, लखे निज रूप की छाया ।।

कहॉ तू था कहॉ मैं था, कभी तो सोच ऐ बन्दे ।
झुका कर शीश को कह दे, प्रभु वन्दे ! प्रभु वन्दे !!

मानुष जन्म अनमोल रे...

मानुष जन्म अनमोल रे, माटी में मत रोल रे ।
अब तो मिला है फिर न मिलेगा कभी नहीं कभी नहीं कभी नहीं रे

तू है बुलबुला पानी का, मत कर मान जवानी का ।
नेक कमाई कर ले बन्दे पता नहीं जिन्दगानी का ।।
मीठा सबसे बोल रे, माटी में मत रोल रे, अब तो मिला...

तू सत्संग में जाया कर गीत प्रभु के गाया कर ।
सांझ सबेरे बैठ के बन्दे ध्यान हरि का लगाया कर ।
नहीं लगता कुछ मोल रे, माटी में न रोल रे, अब तो मिला...

मतलब का संसार है, इसका नहीं एतबार है ।
संभल संभल कर कदम धरो ये फूल नहीं अंगार है ।।
मन की ऑखें खोल रे, माटी में न रोल रे, अब तो मिला...

कौन कहे तेरी महिमा...

कौन कहे तेरी महिमा, कौन कहे तेरी माया ।
किसी ने हे परमेश्वर तेरा...अंत कभी न पाया ।।

अज अमर अविनाशी कण कण में व्यापक है ।
सबसे पहला उपदेशक और अध्यापक है ।
गुरूओं का भी गुरू है ईश्वर, ऋषियों ने फरमाया ।।

सारे सूरज चॉद सितारे भी तुझमें है ।
सभी समुन्दर सभी किनारे भी तुझमें है ।
सृष्टि के अन्दर बाहर तू, एक समान समाया ।।

हर प्रलय के बाद जगत निर्माण करें तू ।
नियत समय पर इसका भी अवसान करे तू ।
सदा तूझे अनगिनत कंठों ने, झूम झूम कर गाया ।।

तुझको ढूँढा रात में और दिन में ढूंढा है ।
पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण में ढूंढा है ।
थके पथिक सब ढूंढ–ढूंढ के, कहीं नजर नहीं आया ।।

वेद पढो और पढ़ाया करो...

वेद पढो और पढ़ाया करो, वेद सुनो और सुनाया करो ।
तन मन से चहूं और सदा वेद का डंका बजाया करो ।

जीव कहॉ से जग में आवे लौट कहॉ फिर जावें ।
ईश्वर क्या है सुष्टि क्या है वेद हमें समझावे ।।
सब को यही समझाया करो, वेद सुनो और सुनाया करो ।

नर व पशु में अन्तर क्या है किस ने यह जगत बनाया ।
मानव जीवन क्यों मिलता है वेद में हमें दर्शाया ।।
भरम सभी यह मिटाया करो, वेद सुनो और सुनाया करो ।

वेद सिखावे इस दुनियां में क्या जीना क्या मरना ।
मात पिता गुरू इष्ट जनों की विधवत् सेवा करना ।।
भक्ति में मन को लगाया करो, वेद सुनो और सुनाया करो ।

वेद ज्ञान है परमेश्वर का ऋषि मुनियों का प्यारा ।
सारे जगत में सब से ऊँचा वैदिक धर्म हमारा ।
'पथिक' यह नारा लगाया करो, वेद सुनो और सुनाया करो ।

जन्मदिवस पर भजन

इस कुल का यह दीपक प्यारा, बालक आयुष्मान हो ।
तेजस्वी वर्चस्वी निर्भय सर्वोत्तम विद्वान हो ।।

बने सुमन सा कोमल सुन्दर, दानी बनकर दान करे ।
दुष्टों से न डरे कभी यह, श्रेष्ठों का सम्मान करे ।
मानव धर्म समझकर चलनेवाला चतुर सुजान हो ।।

विजय चौतरफा जय हो इसकी पाए सुख सम्मान भी ।
शत् आयु से अधिक हो जीवन करे धर्म हित दान भी ।।
नेता बने यह देश अपने का, जग भर में सम्मान हो ।।

परम भक्त बन परम प्रभु का अपना यश फैलाए यह ।
माता पिता की सेवा करके, सच्चा सेवक कहलाए यह ।।
नाम अमर करें जग में अपना, सर्वगुणों की खान हो ।।

विवाह की वर्षगॉठ पर बधाई

शुभ विवाह की वर्षगांठ पर सौ बार बधाई हो ।
सदा रहो मिलकर तुम जैसे दूध मलाई हो ।।

तुमने जीवन साथी बनकर इतने वर्ष बिताये हैं ।
इक दूजे का हाथ पकड़ इस मंजिल तक आये हैं ।
आपस की यह प्रीत हमेशा हर दिन सनाई हो ।।

यह जीवन आदर्श तुम्हारा सबको यह दिखाता है ।
सद् गृहस्थ ऐसा होता है यह सन्देश सुनाता है ।
तन मन धन से जग गण मन की सेवा और भलाई हो ।।

पति पत्नी दो पहिये समझो अपने घर की गाड़ी के ।
दोनों ही माली है सुन्दर फूलों की फुलवारी के ।
जीवन स्वर्ग बने धरती पर ऐसी नेक कमाई हो ।।

तन्दुरूस्ती का तुम दोनों के जीवन को आधार मिले ।
गुजरे वक्त भजन भक्ति में परमेश्वर का प्यार मिले ।
'पथिक' चलो सुख की राहों पर ईश्वर सदा सहाई हो ।।

ऐ ऋषि दयानन्द तेरी..

ऐ ऋषि दयानन्द तेरी युग युग तक अमर कहानी,
हम भूल नहीं सकते हैं, तुमने जो दी कुर्वानी ।।

तू धर्म का था दिवाना, सच्चाई का परवाना ।
तू झुका सत्य के आगे, तेरे आगे झुका जमाना ।।
सुन करके अद्‌भुत वाणी, दुनिया हो गई दिवानी ।।

बन सच्चा सेवक तूने की देश धर्म की सेवा ।
लाखों तेरे अनुयायी, लाखों में बॉटी मेवा ।।
सच तो है आज ये ऋषिवर, सौंपी तूने जिन्दगानी ।।

लाखों भूले भटकों को, तूने मार्ग दिखलाया ।
जो श्रद्धा करके आया, उसे श्रद्धानन्द बनाया ।।
मिल के जो आज हम बैठे, सब तेरी मेहरबानी ।।

ऋषि दयानन्द सरस्वती को नमन है

ऋषि दयानन्द सरस्वती को नमन है बारम्बार ।
उनका ऋणी है ये संसार ।।

वैदिक सन्ध्या हवन बताया, दुनियां में हमें जीना सिखाया ।
वेदों का हमें मार्ग दिखाया, खुद भी चले हमें चलना सिखाया ।।
वेद की वाणी को सुनकर के मिले आनन्द अपार ।।

पढ़ने का अधिकार दिलाया, भेद भाव से हमें बॅचाया ।
दुनिया में सम्मान दिलाया, नारी को मॉ कहके बुलाया ।।
देखो कहीं पर भटक न जाना, याद करो उपकार ।।

ऋषि को बहनों भूल न जाना, तुम भी अपना धर्म निभाना ।
तुम ही दूर्गा, तुम ही पदमा, दिव्य गुणों से शोभित रहना ।।
संध्या हवन करो सब मिलकर, महका दो घर द्वार ।।

सूरज बन दूर किया..

सूरज बन दूर किया जिसने पापों का घोर अंधेरा ।
गुरू देव दयानन्द मेरा, वो देव दयानन्द मेरा ।।
मथुरा नगरी से उदय हुआ, गुरू विरजानन्द का चेरा ।
गुरू देव दयानन्द मेरा, वो देव दयानन्द मेरा ।।

गुरूवर को जो था वचन दिया प्राणों के साथ निभाया ।
पर उपकार में ही जिसने, अपना सर्वस्व लूटाया ।।
तज भूख प्यास सर्दी गर्मी, देखा नहीं सांझ सवेरा ।।

लाखों करोड़ों दुःखी जनों का, दर्द था जिसके दिल में ।
ईंटें खायी पत्थर खायें, हंसता रहा मुश्किल में ।।
यहॉ जिसकी बदौलत सत्य धर्म ने डाला फिर से डेरा ।।

यहॉ छुआछूत और भेदभाव के, थे लाखों मतवाले ।
भोली भाली जनता को, डसते थे विषधर काले ।।
वेद की वीणा बजा सबको वो कर गया मस्त सपेरा ।।

हर विषय में देता था, वो बड़ी बड़ी तफसीलें ।
नभ से ऊँची सिन्धु से गहरी गिरी से सुदृढ़ दलीलें ।।
था जिसने ''पथिक'' दुनिया में मानवता का रंग बिखेरा ।।

धन्य है तुझको ऐ ऋषि..

धन्य है तुझको ऐ ऋषि, तूने हमें जगा दिया ।
सो सो के लुट रहे थे हम, तूने हमें बचा लिया ।।

अन्धों को ऑखें मिल गई, मुर्दों में जान आ गई ।
जादू सा क्या चला दिया, अमृत सा क्या पिला दिया ।।

तुझमें कुछ ऐसी बात थी, स्वामीजी तेरी बात पर ।
लाखों शहीद हो गये, कितनों ने सर कटा दिया ।।

अपने लहूं से लेखराम, तेरी कहानी लिख गया ।
तूने ही लाला लाजपत, शेर ए बबर बना दिया ।।

श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने, सीने पे खायीं गोलियॉ ।
हॅस–हॅस के हंसराज ने, तन मन व धन लूटा दिया ।

तेरे दिवाने जिस घड़ी, दक्षिण दिशा को चल दिये ।
हैरत में लोग रह गये, दुनियां का दिल हिला दिया ।।

महापुरूष जनम लेंगे..

महापुरूष जनम लेंगे सुना न जहॉ होगा ।
गुरूदेव दयानन्द सा दुनियॉ में कहॉ होगा ।।

आकाश के आंगन में जब तक ये सितारे है ।
इन चांद सितारों में, जब तक ये नजारे है ।।
तब तक ऐ ऋषि तेरा अफसाना बयां होगा ।।

भूचाल भी आयेंगे, आंधी अंधियारे भी ।
तूफान भी उठेंगे पतझड़ भी बहारे भी ।।
महकेगा तेरा गुलशन जब दौरे खिंजा होगा ।।

धन रूपी मालो जर का संसार पुजारी है ।
गुरूदेव दयानन्द ने इन्हें ठोकर मारी है ।।
इस तरह जमाने से कोई न गया होगा ।।

बेदर्द जमाने ने क्या क्या न सितम ढाए ।
एहसान दयानन्द के जाये न गिनवाए ।।
''बेमोल'' ऋषि तेरा नहीं कर्ज अदा होगा ।।

सौ बार जनम लेंगे..

सौ बार जनम लेंगे, सौ बार फनाह होंगे ।
अहसान दयानन्द के फिर भी न अदा होंगे ।।

गुजरात की धरती से, सूरज की किरण फूटी ।
अज्ञान अविद्या के, दानव की कमर टूटी ।।
पुरनूर हुआ भारत, अब अर्जों शमा होंगे ।।

निराकार की पूजा को, हृदय में उतारा था ।
पाषाण का अभिनन्दन, कब उसको गंवारा था ।।
मुँह मोड़ लिया जिनके, पत्थर के खुदा होंगे ।।

वीर आर्य मुसाफिर से, बलिदानी दिए हमको ।
स्वामी श्रद्धानन्द जैसे, सेनानी दिए हमको ।।
खूं जिनकी शहादत् के हर गम की दवा होंगे ।।

स्वागत के लिए उनके, पाषाण थे या कंकर ।
गम खा के बने हनुमान, विष पी के बने शंकर ।।
फूल उनके मुकद्दर में होंगे भी तो क्या होंगे ।।

ऋषि गाथा

हम आज एक ऋषिराज की पावन कथा सुनाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।।
हम कथा सुनाते हैं...
हम एक अमर इतिहास के कुछ पन्ने पलटाते हैं।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं।।
हम कथा सुनाते हैं...
ऋषिवर को लाख प्रणाम, गुरुवर को लाख प्रणाम।
धर्मधुरन्धर मुनिवर को कोटि-कोटि प्रणाम, कोटि-कोटि प्रणाम।।

भारत के प्रान्त गुजरात में एक ग्राम है टंकारा।
उस गाँव के ब्राह्मण कुल में जन्मा इक बालक प्यारा।।
बालक के पिता थे करसन जी माँ थी अमृतबाई।
उस दम्पती से हम सबने इक अनमोल निधि पाई।।
हम टंकारा की पुण्यभूमि को शीश झुकाते हैं। ।।१।।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द...

फिर नामकरण की विधि हुई इक दिन कर्सन जी के घर।
अमृत बा का प्यारा बेटा बन गया मूलशंकर।।
पाँचवे वर्ष में स्वयं पिता ने अक्षरज्ञान दिया।
आठवें वर्ष में कुलगुरु ने उपवीत प्रदान किया।।
इस तरह मूलजी जीवनपथ पर चरण बढ़ाते हैं। ।।१।।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द...

फिर इक दिन माँ से पुत्र बोला माँ दुनियाँ है फानी।
मैं मुक्ति खोजने जाऊँगा पानी है ये जिन्दगानी।।
तेजी से मूलजी में आए कुछ परिवर्तन भारी।
दीक्षा लेकर वो बने शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी।।
हम कभी-कभी भगवान की लीला समझ न पाते हैं। ।।२।।

आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द...

फिर जगह-जगह पर घूम युवक ने योगाभ्यास किया।
कुछ काल बाद पूर्णानन्द ने उनको संन्यास दिया।।
मथुरा में रहते थे एक सद्गुरु विरजानन्द नामी।
उनसे मिलने तत्काल चल पड़े दयानन्द स्वामी।।
जब शिक्षा पूर्ण हुई तो गुरुदक्षिणा के क्षण आए।
मुट्ठीभर लौंग स्वामी जी गुरु की भेंट हेतु लाए।।
जो लौंग दयानन्द लाए थे श्रद्धा से चाव से।
वो लौंग लिए गुरुजी ने बड़े ही उदास भाव से।।
स्वामी ने गुरु से विदा माँगी जब आई विदा घड़ी।
तब अन्ध गुरु की आँख में गंगा-यमुना उमड़ पड़ी।।
वो दृश्य देखकर हुई बड़ी स्वामी को हैरानी।
पर इतने में ही मुख से गुरु के निकल पड़ी वाणी।।
जो वाणी गुरुमुख से निकली वो हम दोहराते हैं। ।।४।।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द...

गुरु बोले सुनो दयानन्द मैं निज हृदय खोलता हूँ।
जिस बात ने मुझे रुलाया है वो बात बोलता हूँ।।
इन दिनों बड़ी दयनीय दशा है अपने भारत की।
हिल गईं हैं सारी बुनियादें इस भव्य इमारत की।।
बीमार है सारा देश चल रही है प्रतिकूल हवा।
दिखता है नहीं कोई ऐसा जो इसकी करे दवा।।
हे दयानन्द इस दुःखी देश का तुम उद्धार करो।
मँझधार में है बेड़ा बेटा तुम बेड़ा पार करो।।
इस अन्ध गुरु की यही है इच्छा इस पर ध्यान धरो।
भारत के लिए तुम अपना सारा जीवन दान करो।।
संकट में है अपनी जन्मभूमि तुम जाओ करो रक्षा।
जाओ बेटे भारत के भाग्य का तुम बदलो नक्शा।।
स्वामी जी गुरु की चरणधूल माथे पे लगाते हैं। ।।५।।

आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द...

गुरु की आज्ञा अनुसार इस तरह अपने ब्रह्मचारी।
करने को देश उद्धार चल पड़े बनके क्रान्तिकारी।।
इक हाथ में था झंडा उनके इक हाथ में थी लाठी।
वो चले बनाने हर हिन्दू को फिर से वेदपाठी।।
दिन-रात ऋषि ने घूम-घूम कर अपना वतन देखा।
जब अपना वतन देखा तो हर तरफ घोर पतन देखा।।
बन गए थे देश के देवालय लालच की दुकानें।
मन्दिरों में राम के बैठी थीं रावण की सन्तानें।।
स्वामी ने हर भ्रष्टाचारी का पर्दाफाश किया।
वेदों के सहज उदाहरण से पाखंडों का नाश किया।।
लाखों हिन्दू संगठित हुए वैदिक झंडे के तले।
जात पात भूल कर वे आपस में मिले गले।।
इस तरह देश में परिवर्तन स्वामी जी लाते हैं। ।।६।।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द...

उन दिनों बोलती थी घर-घर में मर्दों की तूती।
हर पुरुष समझता था औरत को पैरों की जूती।।
ऋषि ने जुल्मों से छुड़वाया अबला बेचारी को।
जगदम्बा के सिंहासन पर बैठा दिया नारी को।।
स्वामी जी देख सके ना विधवाओं की करुण व्यथा।
करवा दी शुरु तुरन्त उन्होंने पुनर्विवाह प्रथा।।
सब भेद भाव की दीवारों को चकनाचूर किया।
सदियों का कूड़ा-करकट स्वामी जी ने दूर किया।।
लाखों लोगों ने मान लिया स्वामी को अपना गुरु।
सत्संग कथा प्रवचन कीर्तन घर-घर हो गए शुरु।।
अगणित जिज्ञासु आने लगे स्वामी की सभाओं में।
मच गई धूम वैदिक मन्त्रों की दसों दिशाओं में।।
इतने में जोधपुर का आमन्त्रण स्वामी पाते हैं। ।।७।।

आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द...

जसवतसिंह के उस राज में था दुष्टों का बोलबाला।
राजा था विलासी इस कारण हर तरफ था घोटाला।।
स्वामी जी बोले हे राजन् तुम ये क्या करते हो?
तुम शेर पुत्र होकर के इक निस्चारिता पर मरते हो।।
स्वामी जी घोर गर्जन से सारा महल गुँजाते हैं। ।।८।।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द...

राजा ने तुरत माफी माँगी होकर के शर्मिन्दा।
पर आग-बबूला हो गई दुष्टा सह न सकी निन्दा।।
उस ने ऋषि के रसोइये पर दौलत बरसा दी।
पाकर सम्पदा अपार वो पापी बन गया अपराधी।।
सेवक ने रात में दूध में गुप-चुप संखिया मिला दिया।
फिर काँच का चूरा ड़ाल ऋषिराजा को पिला दिया।।
भोले ऋषि ने पी लिया दूध वो मधुर स्वाद वाला।
पर फौरन स्वामी भाँप गए कुछ दाल में है काला।।
अपने सेवक को तुरन्त ही बुलवाया स्वामी ने।
खुद उसके मुख से सकल भेद खुलवाया स्वामी ने।।
अपराधी को भी धन की थैली दे कर भगाते हैं। ।।९।।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द...

आए डाक्टर आए हकीम और वैद्यराज आए।
पर दवा किसी की नहीं लगी सब के सब घबराए।।
तब रुग्ण ऋषि को जोधपुर से ले जाया गया आबू।
पर वहाँ भी उनके रोग पे कोई पा न सका काबू।।
आबू के बाद अजमेर उन्हें भक्तों ने पहुँचाया।
कुछ ही दिन में ऋषि समझ गए अब अन्तकाल आया।।
वे बोले हे प्रभू तूने मेरे संग खूब खेल खेला।
तेरी इच्छा से मैं समेटता हूँ जीवनलीला।।

बस एक यही बिनति है मेरी हे अन्तर्यामी।
मेरे बच्चों को तू सँभालना जगपालक स्वामी।।
जब अन्त घड़ि आई तो ऋषि ने ओम् शब्द बोला।
...केवल ओम् शब्द बोला।
फिर चुपके से धर दिया धरा पर नाशवान् चोला।।
इस तरह ऋषि तन का पिंजरा खाली कर जाते हैं। ।।१०।।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द...

संसार के आर्यों सुनो हमारा गीत है इक गागर।
इस गागर में हम कैसे भरें ऋषि महिमा का सागर।।
स्वामी जी क्या थे कैसे थे हम ये न बता सकते।
उनकी गुण गरिमा अल्प समय में हम नहीं गा सकते।।
सच पूछो तो भगवान का इक वरदान थे स्वामी जी।
हर दशकन्धर के लिए राम का बाण थे स्वामी जी।।
प्रतिभा के धनि एक जबरदस्त इन्सान थे स्वामी जी।
हिन्दी हिन्दू और हिन्दुस्थान के प्राण थे स्वामी जी।।
क्या बर्मा क्या मॉरिशस क्या सुरिनाम क्या फीजी।
इन सब देशों में विद्यमान् हैं आज भी स्वामी जी।।
केनिया गुआना त्रिनिदाद सिंगापुर युगण्डा।
उड़ रहा सब जगह बड़ी शान से आर्यों का झंड़ा।।
हर आर्य समाज में आज भी स्वामी जी मुस्काते हैं। ।।११।।
आनन्दकन्द ऋषि दयानन्द...

भारतीय पर्व पद्धति

- चैत्र सुदी प्रतिपदा, नव वर्ष
- श्रावणी उपाकर्म, रक्षा बन्धन
- विजया दशमी
- दीपावली
- मकर सौर–संक्रान्ति
- वसन्तपंचमी
- होलीकोत्सव

नवसंवत्सरोत्सव

चैत्र सुदी प्रतिपदा, नव वर्ष

नए साल के स्वागत हवन में निम्नलिखित विशेष आहुतियाँ देवें ।

ओ३म् संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसिदावत्सरोऽसिद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि । उपसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्तां संवत्सरस्ते कल्पतां प्रेत्या एत्यै संचांच प्र च सारय । सुपर्णचिदसि तया देवतयांगिरस्वद् ध्रुवः सीद ।। 1 ।।

यमाय यमसूमथर्वभ्यो अवतोकां संवत्सराय पर्य्यायिणीं परिवत्सराया–विजातामिदा वत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सराय विजर्जरां संवत्सराय पलिक्नीमृभुभ्यो अजिनसन्धरंसाध्येभ्यश्चर्मम्नम् ।। 2 ।।

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभयानि क उ तच्चिकेत ।
तस्मिन्त्साकं त्रिंशता न शंकवो अर्पिताः षष्ठिर्न चलाचलासः ।। 3 ।।

सप्त युंजन्ति रथमकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा ।
त्रिनामा चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनाधितस्थुः ।। 4 ।।

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्त्ति चक्रं परि द्यामृतस्य ।
आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः ।। 5 ।

पंचपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम् ।
अथेमे अन्य उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे पलर अहुरर्पितम् ।। 6 ।।

पंचारे चक्रे परिवर्तमाने तस्मिन्नातस्थुभुवनानि विश्वा ।
तस्य नाक्षस्तप्यत भूरिभारः सनादेव न शीर्यते सनाभिः ।। 7 ।।

सनेमि चक्रमजरं विवावृत उत्तानायां दश युक्ता वहन्ति ।
सूर्यस्य चक्षू रजसैत्यावृतं तस्मिन्नार्पिता भुवनानि विश्वा ।। 8 ।।

संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा रात्र्युपास्महे ।
सा न आयुष्मती प्रजां रायस्पोषेण संसृज ।। 9 ।।

यस्मान्मासा निर्मितास्तिंशदराः संवत्सरो यस्मान्निर्मितो द्वाद्वशारः ।
अहोरात्रा ये परियन्तो नापुस्तेनौदनेनातितराणि मृत्युम् ।। 10 ।।

श्रावणी उपाकर्म, रक्षा बन्धन, श्रावण सुदी पूर्णिमा

सामान्य हवन एवं पूर्णिमा की आहुति देने के बाद..
ओ३म् ब्रह्मणे स्वाहा ।। 1 ।।
ओ३म् छन्दोभ्यः स्वाहा ।। 2 ।।

ये दो आहुतियॉ देकर निम्न 10 आहुतियॉ घी की दें ।

सावित्र्यै स्वाहा ।।1।। ब्रह्मणे स्वाहा ।।2।। श्रद्धायै स्वाहा ।।3।। मेधायै स्वाहा ।।4।। प्रज्ञायै स्वाहा ।।5।। धारणायै स्वाहा ।।6।। सदसस्पतये स्वाहा ।।7।। अनुमतये स्वाहा ।।8।। छन्दोभ्यः स्वाहा ।।9।। ऋषिभ्यः स्वाहा ।।10।।

तदनन्तर ऋग्वेद की निम्न 11 ऋचाओं से आहुतियॉ दें ।

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत्पैरत नामधेयं दधानाः ।
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत् प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः ।। 1।।

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत ।
अत्रा सखायः सखानि जानते भदेषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ।।2।।

यज्ञेन वाचः पदवीयमायन्तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम् ।
तामाभृत्या व्यदधुः पुरूत्रा तां सप्त रेभा अभि सं नवन्ते ।। 3 ।।

उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचममुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम् ।
उतो त्वस्मै तन्वं वि सस्त्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः ।। 4 ।।

उत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुर्नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु ।
अधेन्वा चरति माययैष वाचं शुश्रुवां अफलामपुष्पाम् ।। 5 ।।

यस्तित्याज सचिविदं सखयं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति ।
यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम् ।। 6 ।।

अक्षन्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवुः ।
आदघ्नास उपकक्षास उ त्वे हृदाइव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे ।। 7 ।।

हृदा तष्टेषु मनसो जवेषु यद् ब्राह्मणाः संयजन्ते सखायः ।
अत्राह त्वं वि जहुर्वेद्याभिरोह ब्रह्माणो वि चरन्त्यु त्वे ।। 8 ।।

इमे ये नार्वांग न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः ।
त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञयः ।। 9 ।।

सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखायः ।
किल्बिषस्पृत् पितुषणिह्र्येषामरं हितो भवति वाजिनाय ।। 10 ।।

ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान् गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु ।
ब्रह्मा त्वो वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां विमिमीत उ त्वः ।। 11 ।।

इसके पश्चात् यजुर्वेद के निम्न मंत्र से आहुति दें ।

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
सनिं मेधामयासिषं स्वाहा ।।

शन्नो मित्रः शं वरूणः शन्नो भवत्वर्यमा ।
शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरूरूक्रमः ।।

विजया दशमी

विजया दशमी के दिन आयोजित यज्ञ में निम्नलिखित मन्त्रों से विशेष आहुतियाँ देवें ।

ओ३म् संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं बलम् ।
संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामरस्मि पुरोहितः स्वाहा ।। 1 ।।

समहमेषां राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं बलम् ।
वृश्चामि शत्रुणां बाहूननेन हविषाहं स्वाहा ।। 2 ।।

नीचैः पद्यन्तामधरे भवन्तु ये नः सूरिं मघवानं पृतन्यान् ।
क्षिणामि ब्रह्मणामित्रानुन्नयामि स्वानहम् स्वाहा ।। 3 ।।

तीक्ष्णीयांसः परशोरग्नेस्तीक्ष्णतरा उत ।
इन्द्रस्य वज्रात्तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः स्वाहा ।। 4 ।।

एषामहमायुधा सं स्याम्येषां राष्ट्रं सुवीरं वर्धयामि । एषां क्षत्रमजरमस्तु जिष्णवेऽषां चित्तं विश्वे अवन्तु देवाः स्वाहा ।। 5 ।।

उद्धर्षन्तां मघवन्वाजिनान्युद् वीराणां जयातामेतु घोषः ।
पृथग् घोषा उलुलयः केतुमन्त उदीरताम् ।
देवा इन्द्रज्येष्ठा मरूतो यन्तु सेनया स्वाहा ।। 6 ।।

प्रता जयता नर उग्र वः सन्तु बाहवः ।
तीक्ष्णेषवो अबलधन्वनो हतोग्रायुधा अबलानुग्रबाहवः स्वाहा ।। 7 ।।

अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते । जयामित्रान् प्रपद्यस्व जह्येषां वरं वरं मामीषां मोचि कश्चन स्वाहा ।। 8 ।

उत्तिष्ठत सं नह्यध्वं मित्रा देवजना यूयम् ।
सं दृष्टा गुप्ता वः सन्तु या नो मित्राण्यर्बुदे स्वाहा ।। 10 ।।

उत्तिष्ठतमा रभेथामादानसंदानाभ्याम् ।
अमित्राणां सेना अभि धत्तमर्बुदे स्वाहा ।। 11 ।।

शारदीय नवसस्येष्टि (कार्तिक बदि अमावस्या)

दीपावली

कार्तिक बदि अमावस्या के दिन आयोजित यज्ञ में निम्नलिखित मन्त्रों से स्थालीपाक से आहुतियां देवें । हवन सामग्री में लाजा विशेषतः मिलाई जाय ।

**ओ३म् परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो दवेयानात् ।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् ।। 1 ।।**

**मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः ।। 2 ।।**

**इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूद् भद्रा देवहुतिर्नो अद्य ।
प्रांचो अगाम नृतये हसाय द्राधीय आयुः प्रतरं दधानाः ।। 3 ।।**

**इमं जीवेभ्यः परिधि दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम् ।
शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन ।। 4 ।।**

**यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथा ऋतव ऋतुभिर्यन्ति साधु ।
यथा नः पूर्वमपरोजहात्येवा धातरायूंषि कल्पयैषाम् ।। 5 ।।**

**आयुष्मतामायुष्कृतां प्राणेन जीव मा मृथाः ।
व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ।। 6 ।।**

**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत ।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत् ।। 7 ।।**

शतायुधाय शतवीर्याय शतोतये अभिमातिषाहे ।
शतं यो नः शरदो अजीयादिन्द्रो नेषदति दुरितानि विश्वा ।। 8 ।।

ये चत्वारः पयमो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी वियन्ति ।
तेषां यो अज्यानिमजीतिमावहात्तस्मै नो देवाः परिदत्तेह सर्वं ।। 9 ।

ग्रीष्मो हेमन्त उत नो वसन्तः शरद्वर्षाः सुवितन्नो अस्तु ।
तेषामृतूनां शतशारदानां निवात एषामभये स्याम ।। 10 ।।

इद्वत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः ।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानां ज्योग जीता अहताः स्याम ।। 11 ।।

पृथिवी द्यौः प्रदिशो दिशो यस्मै द्युभिरावृताः ।।
तमिहेन्द्रमुपह्वये शिवा नः सन्तु हेतयः ।। 12 ।।

यन्मे किंचिदुपेप्सितमस्मिन् कर्मणि वृत्रहन् ।
तन्मे सर्वं समृध्यतां जीवतः शरदः शतं स्वाहा ।। 13 ।।

सम्पत्तिभूमिर्वृष्टिर्ज्यैष्ठं श्रेष्ठ्यं श्रीः प्रजामिहावतु स्वाहा ।।
इदमिन्द्राय–इदन्न मम ।। 14 ।।

यस्याभावे वैदिकलौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम् ।
इन्द्रपत्नीमुपह्वये सीतां सा मे त्वनपायिनी भूयात्
कर्मणि स्वाहा ।। इदमिन्द्रपत्न्यै इदन्न मम ।। 15 ।।

अश्वावती गोमती सुनृतावती बिभर्ति या प्राणभृतामतन्द्रिता ।
खलमालिनीमुर्वरामस्मिन् कर्मण्युपह्वये ध्रुवां सा मे त्वनपायिनी
भूयात् स्वाहा ।। इदं सीतायै – इदन्न मम ।। 16 ।।

ओ३म् सीतायै स्वाहा ।। 17 ।।
ओ३म् प्रजायै स्वाहा ।। 18 ।।
ओ३म् शमायै स्वाहा ।। 19 ।।
ओ३म् भूत्यै स्वाहा ।। 20 ।।

व्रीहयश्च मे यवाश्च मे मासाश्च मे तिलाश्च मे मुदगाश्च मे
खल्वाश्च मे प्रियंगवश्च मे अणवश्च मे श्यामाकाश्च मे
नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। 21 ।।

वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्रो या परावतः ।
वाजो नो विश्वेर्देवैर्धनसाताविहावतु ।। 22 ।।

वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवां ऋतुभिः कल्पयाति ।
वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयम् ।। 23 ।।

वाज पुरस्तादुत मध्यतो ना वाजो देवान् हविषा वर्धयाति ।
वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयं ।। 24 ।।

सीरा युंजन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक ।
धीरा देवेषु सुम्नयौ स्वाहा ।। 25 ।।

युनक्त सीरा वियुगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम् ।
विराजः श्नुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पक्वमा यवन् ।। 26

लांगलं पवीरयत् सूशीमं सोमसत्सरू ।
उदिद्वपतु गामविं प्रस्थावद्रथवाहनं पीवरीं च प्रफर्व्यम् ।। 27 ।।

इन्द्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषाभिरक्षतु ।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ।। 28 ।।

शुनं सुफला वि तुदन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अनु यन्तु वाहान् ।
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्तमस्मै ।। 29 ।।

शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लांगलम् ।
शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिंगय ।। 30 ।।

शुनसिरेह स्म मे जुषेथाम् ।
यद्दिवि चक्रथुः पयस्तेनेमामुपसिंचतम ।। 31 ।।

सीते वन्दामहे त्वार्वाची सुभगे भव ।
यथा नः सुमना असो यथा नः सुफला भुवः ।। 32 ।।

घृतेन सीता मधुना समक्ता विश्वेर्देवैरनुमता मरूद्भिः ।
सा नः सीते पयसाभ्याववृत्स्वोर्जस्वती घृतवत्पिन्वमाना ।। 33 ।।

इन्द्रग्निभ्यां स्वाहा ।। इदमिन्द्राग्निभ्यां – इदन्न मम ।। 34 ।।
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ।। इदं विश्वेभ्यो देवेभ्य–इदन्न मम ।। 35

द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ।। इदं द्यावापृथिवीभ्यां–इदन्न मम ।। 36 ।।

स्विष्टमग्ने अभि तत्पृणीहि विश्वांश्च देवः पृतना अभिष्यक ।
सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरं न आयुः ।। 37 ।।

ओ३म् यदस्य कर्मणो त्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् ।। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त् समर्द्धय स्वाहा ।। इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम ।। 38 ।।

मकर सौर–संक्रान्ति

ओ३म् सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू ।
अग्नेरन्तःश्लेषो असि स्वाहा ।।
कल्पेतां द्यावापृथिवी स्वाहा ।।
कल्पन्तामाप ओषधयः स्वाहा ।।
कल्पन्तामग्नयः पृथं मम ज्येष्ठाय सव्रताः स्वाहा ।।

ओ३म् ये अग्नयः समनसो अन्तरा द्यावापृथिवी इमे ।
हैमन्तिकावृतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा
अभिसंविशन्तु तया देवतयांगिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ।।

ओ३म् तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृतू ।
अग्नेरन्तः श्लेषो असि कल्पेन्तां स्वाहा ।।
द्यावापृथिवी कल्पन्तां स्वाहा ।।
आपो ओषधयः कल्पन्तां स्वाहा ।।
अग्नयः पृथं मम जैष्ठ्याय सव्रताः स्वाहा ।।

ओ३म् ये अग्नयः समनसो अन्तरा द्यावापृथिवी इमे । शैशिरावृतू
अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभिसंविशन्तु तया देवतया
अंगिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् स्वाहा ।।

वसन्तपंचमी

ओ३म् वसन्तेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः । रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः ।।

मधुश्च माधवश्च वसन्तिकावृतू अग्नेरन्तः श्लेषो असि कल्पेतां द्यावा पृथिवी कल्पन्तामाप ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथं मम ज्येष्ठाय सव्रताः । ये अग्नयः समनसो अन्तरा द्यावापृथिवी इमे । वासन्तिका–वृतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभिसंविशन्तु तया देवतयांगिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ।।

ओ३म् अषाढासि सहमाना सहस्वारातीः सहस्व पृतनायतः । सहस्रवीर्यासि सा मा जिन्व ।।

ओ३म् मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्न सन्तोषधीः ।।

ओ३म् मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवंरजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ।।

ओ३म् मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ2।। अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।।

होलीकोत्सव

फाल्गुन पूर्णिमा के दिन आयोजित यज्ञ में निम्नलिखित मन्त्रों से स्थालीपाक से आहुतियां देवें ।

शतायुधाय शतवीर्याय शतोतये अभिमातिषाहे ।
शतं यो नः शरदो अजीयादिन्द्रो नेषदति दुरितानि विश्वा ।। 01 ।।

ये चत्वारः पथमो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी वियन्ति ।
तेषां यो अज्यानिमजीतिमावहात्तस्मै नो देवाः परिदत्तेह सर्वं ।। 2 ।।

ग्रीष्मो हेमन्त उत नो वसन्तः शरद्वर्षाः सुवितन्नो अस्तु ।
तेषामृतूनां शतशारदानां निवात एषामभये स्याम ।। 03 ।।

इद्वत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः ।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानां ज्योग जीता अहताः स्याम ।। 04 ।।

पृथिवी द्यौः प्रदिशो दिशो यस्मै द्युभिरावृताः ।।
तमिहेन्द्रमुपह्वये शिवा नः सन्तु हेतयः ।। 05 ।।

यन्मे किंचिदुपेप्सितमस्मिन् कर्मणि वृत्रहन् ।
तन्मे सर्वं समृध्यतां जीवतः शरदः शतं स्वाहा ।। 06 ।।

सम्पत्तिभूमिर्वृष्टिर्ज्यैष्ठं श्रेष्ठ्यं श्रीः प्रजामिहावतु स्वाहा ।।
इदमिन्द्राय–इदन्न मम ।। 07 ।।

यस्याभावे वैदिकलौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम् ।
इन्द्रपत्नीमुपह्वये सीतां सा मे त्वनपायिनी भूयात्
कर्मणि स्वाहा ।। इदमिन्द्रपत्न्यै इदन्न मम ।। 08 ।।

अश्वावती गोमती सुनृतावती बिभर्ति या प्राणभृतामतन्द्रिता ।
खलमालिनीमुर्वरामस्मिन् कर्मण्युपह्वये ध्रुवां सा मे त्वनपायिनी भूयात् स्वाहा ।। इदं सीतायै – इदन्न मम ।। 09 ।।

ओ३म् सीतायै स्वाहा ।। 10 ।।
ओ३म् प्रजायै स्वाहा ।। 11 ।।
ओ३म् शमायै स्वाहा ।। 12 ।।
ओ३म् भूत्यै स्वाहा ।। 13 ।।

व्रीहयश्च मे यवाश्च मे मासाश्च मे तिलाश्च मे मुदगाश्च मे
खल्वाश्च मे प्रियंगवश्च में अणवश्च मे श्यामाकाश्च मे
नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। 14 ।।

वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्रो या परावतः ।
वाजो नो विश्वेर्देवैर्धनसाताविहावतु ।। 15 ।।

वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवां ऋतुभिः कल्पयाति ।
वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयम् ।। 16 ।।

वाजः पुरस्तादुत मध्यतो ना वाजो देवान् हविषा वर्धयाति ।
वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयं ।। 17 ।।

सीरा युंजन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक ।
धीरा देवेषु सुम्नयौ स्वाहा ।। 18 ।।

युनक्त सीरा वियुगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम् ।
विराजः श्नुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पक्वमा यवन् ।। 19

लांगलं पवीरयत् सूशीमं सोमसत्सरू ।
उदिद्वपतु गामविं प्रस्थावद्रथवाहनं पीवरीं च प्रफर्व्यम् ।। 20 ।।

इन्द्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषाभिरक्षतु ।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ।। 21 ।।

शुनं सुफला वि तुदन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अनु यन्तु वाहान् ।
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्तमस्मै ।। 22 ।।

शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लांगलम् ।
शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिंगय ।। 23 ।।

शुनसिरेह स्म मे जुषेथाम् ।
यद्दिवि चक्रथुः पयस्तेनेमामुपसिंचतम ।। 24 ।।

सीते वन्दामहे त्वार्वाची सुभगे भव ।
यथा नः सुमना असो यथा नः सुफला भुवः ।। 25 ।।

घृतेन सीता मधुना समक्ता विश्वेर्देवैरनुमता मरूद्भिः ।
सा नः सीते पयसाभ्याववृत्स्वोर्जस्वती घृतवत्पिन्वमाना ।। 26 ।।

इन्द्रग्निभ्यां स्वाहा ।। इदमिन्द्राग्निभ्यां–इदन्न मम ।। 27।।
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ।। इदं विश्वेभ्यो देवेभ्य–इदन्न मम ।। 28

द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ।। इदं द्यावापृथिवीभ्यां–इदन्न मम ।। 29।।

स्विष्टमग्ने अभि तत्पृणीहि विश्वांश्च देवः पृतना अभिष्यक ।
सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरं न आयुः ।। 30 ।।

ओ३म् यदस्य कर्मणो त्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् ।। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त् समर्द्धय स्वाहा ।। इदमग्नये स्विष्टकृते–इदन्न मम ।। 31 ।।

।। श्री सूक्तम् ।।

ओ३म् वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम ।।

प्राणश्च मे अपानाश्च मे व्यानश्च मे असुश्च मे चित्तं च म आधितं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।

ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मे अंगानि च में अस्थीनि च में परूंषि च में शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।

ज्येष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मे अमश्च मे अम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राधिमा च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिद्रस्य काम्यम् ।
सनिं मेधामयासिषं स्वाहा ।।

यां मेधां देवगणाः पितरश्च उपासते ।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरू स्वाहा ।।

मेधां मे वरूणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः । मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ।।

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् । मयि देवा दधतु श्रियम् उत्तमां तस्यै ते स्वाहा ।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय पशूनां रूपमन्नस्य रसो यशः री रयतां मयि स्वाहा ।।

कया नश्चित्र आभुवदूति सदावृधः सखा ।
कया शचिश्ठया वृता ।।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ।।

दिवो वा विश्ण उत वा पृथिव्या महो वा विष्ण अउरोरन्तरिक्षात् । उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्याद्विश्णवे त्वा ।।

ओ३म् भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्या भर ।
भूरि घेदिन्द्र दित्ससि ।।

ओ३म् इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे ।
पोषं रयिणामरिष्टिं तनुनां वाचः सुदिनत्व मह्नाम् ।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां ।।

ओ३म् श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोंकं म इषाण ।।

।। ईश–सूक्त ।।

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।। 1 ।।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।। ।। 2 ।।

असूर्या नाम ते लोकाऽअन्धेन तमसावृताः ।
तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जना : ।। ।। 3 ।।

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनदेवाऽआप्नुवन्पूर्वमर्शत् ।
तत्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ।। 4 ।।

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यत ।। ।। 5 ।।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति ।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति ।। ।। 6 ।।

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।
तत्र को मोहः कः शोकऽएकत्वमनुपश्यतः ।। ।। 7 ।।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमवृणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ।। ।। 8 ।।

अन्धन्तमः प्र विशन्ति ये सम्भूतिमुपासते ।
ततोऽभूय इव ते तमो यऽउ सम्भूत्यां रताः ।। ।। 9 ।।

अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् ।
इति सुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ।। ।। 10 ।।

सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह ।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते ।। ।। 11 ।।

अन्धन्तमः प्र विशन्ति ये विद्यामुपासते ।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ विद्यायां रताः ।। ।। 12 ।।

अन्यदेवाहुर्विद्याया अन्दाहुरविद्ययाः ।
इति सुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ।। ।। 13 ।।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ।। ।। 14 ।।

वायुरनीलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम् ।
ओ३म् क्रतो स्मर क्लिवे स्मर कृतं स्मर ।। ।। 15 ।।

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।। 16 ।।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
योऽसावादित्ये पुरूषः सोऽसावहम् । ओ३म् खं ब्रह्म ।। 17 ।।

यज्ञ–महिमा

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से ।
जल्दी प्रसन्न होते हैं, भगवान यज्ञ से ।।

ऋषियों ने ऊँचा माना है स्थान यज्ञ का ।
करते हैं दुनियॉ वाले सब सम्मान यज्ञ का ।।
दर्जा है तीन लोक में, महान यज्ञ का ।
भगवान का है यज्ञ और भगवान यज्ञ का ।।
जाता है देवलोक में इन्सान यज्ञ से ।।

सबको प्रसाद यज्ञ का पहुँचाते अग्निदेव ।
बदले में एक के अनेक, देते अग्निदेव ।।
बादल बनाके भूमि पर, बरसाते अग्निदेव ।
पैदा अनाज करते हैं–भगवान यज्ञ से ।।
होता है सार्थक वेद का विज्ञान से ।।

शक्ति और तेज यश भरा इस शुद्ध नाम में ।
साक्षी यही है विश्व के हर नेक काम में ।।
पूजा है इसको कृष्ण ने भगवान राम ने ।
होता है कन्या दान भी इसी के सामने ।।
मिलता है राज्य, कीर्ति, सन्तान यज्ञ से ।।

चाहे अमीर है कोई, चाहे गरीब है ।
जो नित्य यज्ञ करता है, वो खुश–नसीव है ।।
हम सब में रहे सर्वदा यज्ञीय भावना ।
हम सबकी सच्चे दिल से है यह श्रेष्ठ कामना ।।
होती है पूर्ण कामना महान यज्ञ से ।।

ओ३म् ध्वज गीत ::

जयति ओ३म् ध्वज व्योम विहारी,
विश्व प्रेम प्रतिमा अति प्यारी ।
सत्य सुधा बरसाने वाला, स्नेहलता सरसाने वाला ।
साम्य सुमन विकसाने वाला, विश्व विमोहक भव भय हारी ।

इसके नीचे बढ़े अभय मन, सत्पथ पर सब धर्म धूरीजन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवे दिशि सारी ।।

इससे सारे क्लेश समन हों, दुर्मति दानव द्वेष दमन हों ।
अति उज्ज्वल अति पावन मन हो, प्रेम तरंग बहे सुखकारी ।।

इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊँच नीच का भेद भुलाकर ।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर, पन्थाई पाखण्ड विसारी ।।

इसी ध्वजा को लेकर कर में, भर दें वेद ज्ञान घर घर में,
सुभग शान्ति फैले जग भर में, मिटे अविद्या की अंधियारी ।।

विश्व प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य अहिंसा को अपनावें ।
जग में जीवन ज्योति जगायें, त्याग पूर्ण हो वृत्ति हमारी ।।

आर्य जाति का सुयश अक्षय हो, आर्य ध्वजा की अविचल जय हो ।
आर्य जनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी ।।

राष्ट्र के लिए प्रार्थना ::

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् । आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् । दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वाऩाशुः सप्तिः पुरन्धीर्योषा जिष्णु रथेष्ठा सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् । निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।।

पद्यानुवाद ::

ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हो, द्विज ब्रह्म तेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाश कारी ।।

होंवें दुधारू गौवें, पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही ।।

बलवान सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवें ।।

फल–फूल से लदी हो, औषध अमोघ सारी ।
हो योग–क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ।।

शान्ति कीजिए प्रभु...

शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में ।।
जल में थल में और गगन में, अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में ।
औषधि वनस्पति वन उपवन में, सकल विश्व के जड़ चेतन में ।।
ब्राह्मण के उपदेश वचन में, क्षत्रिय के द्वारा हो रण में ।
वैश्य जनों के होवे धन में, और शुद्र के हो चर–रण में ।।
शांति राष्ट्र निर्माण सृजन में, नगर ग्राम में और भुवन में ।
जीव मात्र के तन में मन में, और जगत के हो कण कण में ।।

आरती

ओ३म् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनन के संकट , क्षण में दूर करें ।।
जो ध्यावें फल पावें, दुःख विनशे मन का ।
सुख सम्पति घर आवें, कष्ट मिटे तन का ।।
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी ।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।।
तुम करूणा के सागर, तुम पालनकर्ता ।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता ।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किसविधि मिलूँ दयामय, दो मुझको सुमति ।।
दीनबन्धु दुःखहर्ता तुम रक्षक मेरे ।
करूणा हस्त बढ़ाओ, द्वार पड़ा तेरे ।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ।।

शान्ति पाठ :

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्बह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।